संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 270
पृष्ठ 8
शनिवार
20 जून 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित   Email : shaharsamta@gmail.com   Website : https://Shaharsamta.com   सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- अंगूर के हर दाने में छिपा है...   विचार- खरगे के सवाल, भागवत के जवाब...   खेल- क्या वनडे विश्व कप में खेलेंगे...

चढ़ावा चोरी मामले के बीच योगी राम मंदिर पहुंचे, अयोध्या में कहा

अपराधी कोई हो, नहीं बचेगा

अयोध्या,संवाददाता। राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी को लेकर जारी विवाद के बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को अयोध्या पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले हनुमानगढ़ी मंदिर में पूजा–अर्चना की और इसके बाद राम जन्मभूमि परिसर पहुंचकर रामलला के दर्शन किए। मुख्यमंत्री के इस दौरे को ऐसे समय में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जब मंदिर में चढ़ावे की राशि को लेकर राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर बहस तेज है। अयोध्या में संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्षी दलों, विशेष रूप से कांग्रेस, पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने कभी भगवान राम के नाम पर विरोध किया और राम मंदिर निर्माण को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास किए, वही आज अयोध्या को लेकर सवाल उठा रहे हैं। योगी ने कहा कि राम मंदिर के निर्माण को रोकने के लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत लगा दी थी और अदालत में भगवान राम के अस्तित्व तक पर सवाल उठाए गए थे। उन्होंने आरोप लगाया कि आज वही लोग अयोध्या के मुद्दे पर राजनीति कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि किसी के पास चढ़ावा चोरी से जुड़े कोई तथ्य या प्रमाण हैं, तो उन्हें विशेष जांच दल (एसआईटी) को सौंपना चाहिए। उन्होंने रामभक्तों से धैर्य बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि भगवान श्रीराम ने मर्यादा और संयम का संदेश दिया है और पांच सौ वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर का सपना पूरा हुआ है। योगी ने कहा, कुछ दिन और इंतजार कीजिए। किसी के बहकावे में आने की जरूरत नहीं है। अयोध्या और राम मंदिर की गरिमा को बदनाम करने की कोशिशों से सावधान रहना होगा। यदि कोई दोषी पाया जाता है तो वह चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उसके खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी का मामला तब चर्चा में आया, जब समाजवादी पार्टी सरकार में मंत्री रह चुके पवन पांडेय ने सात जून को आरोप लगाया कि मंदिर से पांच से साढ़े सात करोड़ रुपये तक की राशि गायब हुई है। इसके बाद समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी इस मुद्दे पर सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा था कि मामले की न्यायिक निगरानी या अदालत की देखरेख में जांच होनी चाहिए। इन आरोपों के बाद श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने स्पष्ट किया था कि उनके संज्ञान में अब तक इस तरह की कोई पुष्टि नहीं आई है। विवाद बढ़ने के बाद भारतीय जनता पार्टी के नेता डॉ. रजनीश सिंह ने नौ जून को प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर पूरे मामले की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से जांच कराने की मांग की थी। इसके एक दिन बाद प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने राम मंदिर ट्रस्ट से इस मामले में विस्तृत रिपोर्ट मांगी। इस घटनाक्रम के बाद जांच प्रक्रिया को लेकर प्रशासनिक स्तर पर भी सक्रियता बढ़ गई। चढ़ावे की कथित हेराफेरी की जांच के दौरान अब तक पांच लोगों के नाम सामने आए हैं। इनमें लवकुश, अवनीश, अनुकल्प, करुणे और रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू शामिल हैं।

बंगाल मतदाता सूची विवाद पर अदालत सख्त

नाम हटाने वाली याचिका पर जल्द फैसला करने का दिया निर्देश

मुंबई,एजेंसी। पश्चिम बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान मतदाता सूची से नाम हटाए जाने के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी की है। शीर्ष अदालत ने एक वरिष्ठ वकील की याचिका पर सुनवाई करते हुए अपीलीय न्यायाधिकरण को निर्देश दिया कि वह मामले का जल्द निपटारा करे। अदालत ने कहा कि पहली नजर में याचिकाकर्ता पश्चिम बंगाल के वास्तविक निवासी प्रतीत होते हैं। इस टिप्पणी के बाद मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया और उससे जुड़े विवाद एक बार फिर चर्चा में आ गए हैं। मामला 75 वर्षीय एक वकील से जुड़ा है, जिनका नाम विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान मतदाता सूची से हटा दिया गया था। याचिकाकर्ता के वकील ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वह पिछले करीब 50 वर्षों से वकालत कर रहे हैं और एसआईआर से पहले वैध मतदाता थे। नाम हटाए जाने के खिलाफ उन्होंने अपीलीय न्यायाधिकरण में अपील दायर की थी, लेकिन उस पर अब तक फैसला नहीं हुआ। इसी के बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि याचिकाकर्ता पश्चिम बंगाल के वास्तविक निवासी दिखाई देते हैं। अदालत ने यह भी कहा कि याचिकाकर्ता को उस व्यवस्था की जानकारी है जो मतदाता सूची से जुड़े विवादों के समाधान के लिए बनाई गई है। अदालत ने मामले के गुण–दोष पर विस्तृत टिप्पणी किए बिना अपीलीय न्यायाधिकरण को याचिका पर शीघ्र निर्णय लेने का निर्देश दिया। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका का निपटारा करते हुए अपीलीय न्यायाधिकरण से कहा कि वह मामले पर तेजी से सुनवाई करे और संभव हो तो दो महीने के भीतर फैसला सुनाए। अदालत ने यह भी नोट किया कि याचिकाकर्ता 1977 से मुर्शिदाबाद में वकालत कर रहे हैं।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः मैं आम हूँ
लेखकः डॉ0 प्रदीप चित्रांशी
पताः 113 ए, लूकरगंज, प्रयागराज– 211001
प्रकाशकः लोक रंजन प्रकाशन, प्रयागराज
ई–मेलःlokranjanprakashan@gmail.com
प्रकाशन वर्षः 2026
मूल्यः 180/–   पृष्ठ संख्याः 125

यह पुस्तक अपने शीर्षक में ही एक अद्भुत संदेश समेटे हुए है। "मैं आम हूँ"। यह केवल एक फल की आत्मकथा नहीं, बल्कि यह 'साधारण' में छिपे 'असाधारण' की कथा है। यह हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में जो सामान्य दिखाई देता है, वही सबसे अधिक व्यापक, उपयोगी और सार्थक होता है।

पेशे से अभियंता रहे डॉ0 प्रदीप चित्रांशी जी एक वरिष्ठ साहित्यकार भी है। उनके द्वारा रचित पुस्तक श्मैं आम हूँश का लोकार्पण 8 मई 2026 को खुसरो बाग प्रयागराज के प्रांगण में प्रकृति की गोंद में वरिष्ठ साहित्यकारों व प्रशासनिक अधिकारियों के बीच किया गया। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैं भी उस शुभ अवसर पर उपस्थित रहा। प्रस्तुत पुस्तक में आम के इतिहास के साथ ही लँगड़ा, चौसा, दशहरी, आदि पचास विभिन्न प्रकार के आमों के गुण–दोष व उसके ऐतिहासिक महत्व के साथ ही मानवीय संवेदनाओं को जोड़ते हुए बहुत ही सुंदर तरीके से सन्दर्भ सहित प्रत्येक आम के ऊपर दो कुंडलियां छंद भी लिखा गया है। इस प्रकार पुस्तक में गद्य व काव्य दोनों का बहुत ही खूबसूरती से सामंजस्य स्थापित किया गया है।

लेखक डॉ० प्रदीप चित्रांशी जी ने जिस सरलता, संवेदनशीलता और गहराई के साथ आम के माध्यम से जीवन–दर्शन प्रस्तुत किया है, वह अत्यंत सराहनीय है। इस कृति में केवल आम के स्वाद, सुगंध या विविधता का वर्णन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से संस्कृति, इतिहास, परंपरा और मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय किया गया है। पुस्तक में आम को केवल "फलों का राजा" नहीं, बल्कि विनम्रता, समर्पण और लोककल्याण का प्रतीक बताया गया है। जिस प्रकार आम का वृक्ष स्वयं धूप, वर्षा और आँधियों को सहकर दूसरों को फल देता है, उसी प्रकार यह हमें त्याग और सेवा का संदेश देता है। इस कृति की एक और विशेषता यह है कि इसमें साहित्यिक सौंदर्य और तथ्यात्मक जानकारी का अद्भुत संगम है। आम की विभिन्न प्रजातियों का वर्णन हो या उससे जुड़ी ऐतिहासिक घटनाएँ। हर पृष्ठ पाठक को एक नई अनुभूति प्रदान करता है। पुस्तक की भाषा सरल, सहज और पाठक से सीधा संवाद स्थापित करने वाली है, जिससे यह हर वर्ग के पाठकों के लिए पठनीय बन जाती है। इस कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी यथार्थपरकता है। इसमें कहीं भी कृत्रिमता या बनावट नहीं दिखती, बल्कि हर जानकारी और भाव जीवन के धरातल से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं।

आज जब हम आधुनिकता की दौड़ में अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, ऐसी पुस्तकें हमें अपनी परंपराओं और प्रकृति से जोड़ने का कार्य करती हैं। "मैं आम हूँ" वास्तव में एक ऐसी रचना है, जो हमें सोचने पर विवश करती है कि क्या हम भी अपने जीवन में 'आम' की तरह सरल, उपयोगी और मधुर बन पा रहे हैं? यदि संक्षिप्त में कहे तो इस पुस्तक में साहित्य की सरसता है तो इतिहास की गहराई भी, संस्कृति की सुगंध है तो जीवन–दर्शन की मधुरता भी साहित्य प्रेमियों के साथ–साथ सामाजिक सरोकार रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

अंत में, मैं लेखक महोदय को इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह पुस्तक साहित्य जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाए तथा अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचे।

संतोष कुमार 'प्रीत'
राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत

तीन लाख करोड़ के रक्षा उत्पादन तथा 50,000 करोड़ के रक्षा निर्यात का लक्ष्य समय से पहले हासिल करेंगे : राजनाथ

नयी दिल्ली,एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि देश रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है और तीन लाख करोड़ रुपए के रक्षा उत्पादन तथा 50,000 करोड़ रुपए के रक्षा निर्यात के लक्ष्यों को समय से पहले हासिल कर लिया जायेगा। श्री सिंह ने शुक्रवार को नागपुर में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ यंत्र इंडिया लिमिटेड की आयुध निर्माणी अंबाझरी इकाई में अत्याधुनिक 10,000 टन एल्यूमिनियम एक्सट्रूजन प्रेस के भूमि पूजन के अवसर पर यह बात कही। उन्होंने कहा है कि निगमीकरण के बाद आयुध निर्माणी बोर्ड का उत्पादन वित्त वर्ष 2025–26 में 26,282 करोड़ रुपए तक पहुँच गया जो वित्त वर्ष 2019–20 में 12,755 करोड़ रुपए था।निर्यात भी 81 करोड़ से बढ़कर 4,561 करोड़ रुपए पहुंच गया है। उन्होंने कहा , जो राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम होता है, वह अपने हितों की सुरक्षा के लिए सबसे अधिक आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता है। उन्होंने कहा कि यह एक्सट्रूजन प्रेस देश के दृष्टिकोण में उस परिवर्तन का प्रतीक है, जिसमें आयात पर निर्भर रहने के बजाय महत्वपूर्ण वस्तुओं का घरेलू उत्पादन किया जा रहा है। उन्होंने मौजूदा भू–राजनीतिक परिदृश्य में भविष्य के लिए तैयार रहने के लिए सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं पर नियंत्रण को अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित प्रेस देश में अपनी तरह की सबसे उन्नत सुविधाओं में से एक होगी। यह रक्षा प्रणालियों एवं विभिन्न प्लेटफॉर्म, अंतरिक्ष एवं विमानन संरचनाओं, मिसाइल कार्यक्रमों, रेलवे एवं परिवहन क्षेत्रों तथा अन्य रणनीतिक औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए आवश्यक बड़े और जटिल एल्यूमिनियम मिश्रधातु प्रोफाइलों के निर्माण में सहायता करेगी। यह परियोजना महत्वपूर्ण एल्यूमिनियम एक्सट्रूजन के आयात पर निर्भरता कम करने, घरेलू आपूर्ति श्रृंखला को सुदृढ़ करने तथा स्वदेशी उत्पादन के माध्यम से रणनीतिक क्षेत्रों की भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होगी।

रक्षा मंत्री ने कहा, ष्यह एक्सट्रूजन प्रेस एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करता है। आधुनिक लड़ाकू विमान, मिसाइलें और उन्नत अंतरिक्ष कार्यक्रम ऐसे धातुओं की मांग करते हैं जो हल्की होने के साथ–साथ मजबूत भी हों और अत्यंत कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकें। ऐसी धातुएँ विशेष प्रक्रियाओं के माध्यम से तैयार की जाती हैं। यदि धातु की गुणवत्ता श्रेष्ठ होगी, तो वह हर परिस्थिति में प्रभावी सिद्ध होगी। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता में भारत–निर्मित उपकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए श्री सिंह ने मजबूत हार्डवेयर के स्वदेशी निर्माण को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बड़ी मशीनों की वास्तविक शक्ति हजारों महत्वपूर्ण अवयवों से मिलकर बनती है और यह एक्सट्रूजन प्रेस इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।रक्षा मंत्री ने कहा कि आज जबकि युद्ध का स्वरूप बदल रहा है और शत्रुओं की पहचान करना अधिक कठिन हो गया है, फिर भी पारंपरिक युद्ध और उससे जुड़े साधनों की प्रासंगिकता 1947 की तरह आज भी बनी हुई है और 2047 में भी काफी हद तक बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि एक मजबूत सैन्य–औद्योगिक आधार का महत्व लंबे समय तक बना रहेगा।

शांति सभी के लिए अच्छीः शशि थरूर

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। शशि थरूर ने US–ईरान शांति समझौते का स्वागत करते हुए इसे भारत और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी बताया है। उन्होंने कहा कि इससे देश को तेल, गैस, फर्टिलाइजर और एल्युमीनियम जैसी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति फिर से शुरू होने की उम्मीद है, जिससे आर्थिक स्थिरता आएगी। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने शुक्रवार को अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौते का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि एक ष्शांति–प्रिय देशष के तौर पर भारत को इस घटनाक्रम का समर्थन करना चाहिए, क्योंकि इससे देश और दुनिया दोनों को फायदा होगा। समझौते के महत्व पर बात करते हुए थरूर ने कहा कि इससे उन जरूरी चीजों की सप्लाई फिर से शुरू हो सकेगी जो टकराव की वजह से रुक गई थीं। पत्रकारों से बात करते हुए कांग्रेस सांसद ने कहा कि बात यह है कि हमारे देश को इस तरह के हालात का काफी अनुभव रहा है। एशिया में, यहाँ तक कि दक्षिण कोरिया में भी फैक्टरियाँ बंद हो रही थीं। इसलिए, ऐसे हालात में जब कोई समाधान निकलता है और शांति आती है, तो यह सभी के लिए अच्छा होता है, दुनिया के लिए अच्छा होता है। उन्होंने भारत के लिए आर्थिक फायदों पर भी जोर दिया, खघसकर जरूरी चीजों के आयात के मामले में। थरूर ने आगे कहा कि हमें उम्मीद है कि इसके बाद, हमारे तेल और गैस, हमारे फर्टिलाइजर, हमारे एल्युमीनियम की सप्लाई जो वहाँ से आती थी और जो सप्लाई वहाँ फंसी हुई थी, वे सभी आ पाएँगी। इसलिए, जब यह सब हो जाएगा, तो मुझे लगता है कि पूरे देश और दुनिया को इससे फायदा होगा।

टेलीग्राम पर अस्थायी बैन बरकरार, दिल्ली हाईकोर्ट ने सही ठहराया सरकार का फैसला

नयी दिल्ली,एजेंसी। नीट री–एग्जाम से पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने टेलीग्राम ऐप प्लेटफॉर्म पर सरकार के अस्थायी बैन के फैसले को सही ठहराया है। शुक्रवार को हाईकोर्ट ने अस्थायी बैन के खिलाफ दायर टेलीग्राम की याचिका को भी खारिज कर दिया। दिल्ली हाईकोर्ट की जस्टिस तेजस कारिया की सिंगल बेंच ने शुक्रवार को टेलीग्राम की याचिका पर अपना फैसला दिया। जस्टिस तेजस करिया ने कहा, सरकार का आदेश सही है। आईटी एक्ट के सेक्शन 69ए के तहत किसी प्लेटफॉर्म पर बैन लगाया जा सकता है।

सर्दियों के लिए पहले ही दिल्ली सरकार ने जारी किया प्रदूषण नियंत्रण रोडमैप

नयी दिल्ली,एजेंसी। सरकार ने सर्दियों के दौरान वायु प्रदूषण से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए शीतकालीन वायु गुणवत्ता प्रबंधन व्यवस्था अधिसूचित कर दी है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुक्रवार को बताया कि इस बार सरकार ने आपातकालीन प्रतिक्रिया पर निर्भर रहने के बजाय अग्रिम तैयारी, समयबद्ध हस्तक्षेप और बेहतर समन्वय की रणनीति अपनाई है। आमतौर पर सर्दियों में प्रदूषण बढ़ने या ग्रैप लागू होने के बाद प्रतिबंधों की जानकारी मिलती थी, जिससे हितधारकों को तैयारी का समय नहीं मिलता था। इस बार सरकार ने सर्दियों की शुरुआत से कई महीने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि नवंबर से फरवरी के दौरान प्रदूषण बढ़ने पर क्या कदम उठाए जाएंगे। दिल्ली के सभी पेट्रोल पंपों पर केवल उन्हीं वाहनों को ईंधन मिलेगा, जिनके पास वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र होगा। 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दिल्ली के बाहर पंजीकृत गैर बीएस–6 वाणिज्यिक वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। हालांकि, सीएनजी, इलेक्ट्रिक, आपातकालीन सेवाओं और सरकारी वाहनों को छूट मिलेगी। निजी वाहनों के उपयोग को कम करने के लिए 1 नवंबर से 28 फरवरी तक अधिकृत पार्किंग स्थलों पर पार्किंग शुल्क दोगुना किया जाएगा। वर्क फ्रॉम होम यातायात का दबाव कम करने के लिए चरणबद्ध कार्यालय समय लागू किया जाएगा। सरकारी और निजी कार्यालयों में अधिकतम 50 प्रतिशत भौतिक उपस्थिति रहेगी, जबकि शेष कर्मचारी वर्क फ्रॉम होम करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण और ध्वस्तीकरण गतिविधियों को 1 नवंबर से 31 जनवरी तक निर्धारित पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप हीसंचालित करना होगा। 10 दिसंबर से 20 जनवरी के बीच (जब प्रदूषण का स्तर सर्वाधिक रहने की आशंका होती है) निर्माण कार्यों पर अतिरिक्त प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। बड़े वाणिज्यिक ऊंचे भवनों और प्रमुख निर्माण स्थलों पर एंटी–स्मॉग गन और जल–कण आधारित धूल नियंत्रण प्रणालियों का संचालन अनिवार्य होगा। प्रदूषण नियंत्रण के लिए खुले में कचरा, पत्तियां या अन्य सामग्री जलाने की घटनाओं पर पूरी तरह रोक रहेगी।

गंगा पर बनाए जा रहे सिक्स लेन पुल पर प्रयागराज वालों से ना वसूला जाए टोल टैक्स

प्रयागराज। शहर उत्तरी के भाजपा विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी ने बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर प्रयागराज के विकास और स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए चार सूत्रीय मांग पत्र सौंपे। शहर उत्तरी के भाजपा विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी ने बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर प्रयागराज के विकास और स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए चार सूत्रीय मांग पत्र सौंपे। उन्होंने कहा कि एनएचएआई द्वारा मलाक हरहर से स्टैनली रोड तक नवनिर्मित छह लेन पुल जो पूरी तरह नगरीय क्षेत्र में आता है, इसलिए नियमों के तहत इसे आम जनता के लिए पूरी तरह टोल मुक्त घोषित किया जाए। ताकि शहरवासियों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ न पड़े। विधायक ने फाफामऊ के चंद्रशेखर आजाद गंगा सेतु पर लगने वाले भीषण जाम से मुक्ति के लिए उसके समानांतर एक

और दो लेन के नए पुल के निर्माण के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग (एनएच) को निर्देशित करने की मांग की। विधायक ने कछारी क्षेत्रों के विकास को गति देने के लिए राज्य सड़क निधि से शहर उत्तरी विधानसभा के 17 मोहल्लों में सड़क–नाली और चार लघु सेतुओं के निर्माण के लिए वित्तीय स्वीकृति प्रदान करने का भी अनुरोध किया। महाकुंभ और माघ मेले के दौरान संगम नगरी में देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की भारी भीड़ का हवाला देते हुए उन्होंने शहर के सात प्रमुख और व्यस्त चौराहों पर नए फ्लाईओवरों के निर्माण व मौजूदा फ्लाईओवरों के दोहरीकरण की मांग पुरजोर तरीके से उठाई। इनमें मेडिकल चौराहा, धोबी घाट चौराहा, सिविल लाइंस हनुमान मंदिर व बस अड्डा, और कटरा एरोप्लेन चौराहे जैसे मुख्य स्थल शामिल हैं। कम से हुई मुलाकात के बाद हर्षवर्धन ने बताया कि इन विकास कार्यों पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए उन्होंने कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

मुहर्रम के पहले ताजियादारों ने बताई अपनी समस्या

प्रयागराज। नगर पंचायत कार्यालय पर मुहर्रम मार्ग पर होने वाली सफाई, बिजली, गड्ढों आदि की समस्या पर बृहस्पतिवार को एक बैठक रखी गई। जिसमें कस्बे के विभिन्न ताजियेदारों ने अपने वार्ड में होने वाली समस्या बताई। बैठक की अध्यक्षता कर रहे चेयरमैन प्रतिनिधि आमिर शकील टंकी ने कहा कि अलम के जुलूस के पहले सभी मार्ग का मरम्मत सुनिश्चित कर लिया जाएगा। इस दौरान अधिशाषी अधिकारी प्रवीण कुमार, लिपिक चंदन पटेल, विनोद सोनकर, सभासद तबस्सुम जहां, कुंवर नितेश, अंसार अहमद आदि रहे।

ट्रेन से गिरकर युवक घायल, इलाज के दौरान मौत

प्रयागराज। थाना क्षेत्र के मनकवार गांव के सामने बृहस्पतिवार की सुबह मुंबई–हावड़ा रेलमार्ग पर ट्रेन से गिरकर एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटनास्थल पर पहुंचे रेलकर्मी से सूचना पाकर पहुंची पुलिस उसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा ले गई। घायल युवक की नाजुक हालत देखकर डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल प्रयागराज रेफर कर दिया। पुलिस एंबुलेंस से घायल को अस्पताल ले जा रही थी कि रास्ते में उसकी मौत हो गई। मृतक के पास से मिले कागजात से उसकी पहचान सूरज कुमार (18) निवासी ग्राम बसैठा, बसंत पट्टी, मुजफ्फरपुर बिहार के रूप में हुई। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

विवाहिता ने ससुरालियों पर प्राथमिकी दर्ज कराई

प्रयागराज। क्षेत्र के वाजिदपुर छीतेमऊ गांव निवासी राबिया बानो ने ससुरालियों पर दहेज उत्पीड़न और घर से निकालने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। उसकी शादी दो वर्ष पहले प्रतापगढ़ के बाघराय थाना क्षेत्र स्थित ग्राम डीठन का पूरा निवासी नियाजशाह से हुई थी। पीड़िता का आरोप है कि शादी के बाद ससुराल वाले पांच लाख रुपये नकद और अन्य दहेज की मांग करने लगे। दहेज के लिए मना करने पर पीड़िता को प्रताड़ित किया जाने लगा। एक वर्ष पहले दहेज की मांग पूरी न होने पर उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया गया, तब से वह मायके में रह रही है। आरोप है कि कई बार सुलह की कोशिश की गई लेकिन ससुरालवालों ने विदाई कराने से इन्कार कर दिया। राबिया ने बृहस्पतिवार को मऊआइमा थाने में तहरीर दी है। पुलिस ने पति नियाजशाह, सास सकीना बानो, ससुर भुल्लन, जेठ हुसैन, देवर नन्चू और ननद शब्बो व रेहाना के खिलाफ प्राथमिकी दर्जकर जांच कर रही है।

NAME CHANGE

Please be informed that in my Army No. 15664419W Rank NAK Name: Om Prakas Ram, my daughter name **Nitu** is mentioned incorrect. That my daughter correct name **Nitu Rajbhar** the same is mentioned is Adhaar Card, High School marksheet, etc. which is the authentic evidence/ document, so the require change my service document accordingly.

Om Prakas Ram
Resident- Village- Nawapura, Post- Bharthipur, Tehsil- Lalganj Dist.- Azamgarh (U.P.)

इलाहाबाद हाई कोर्ट का महत्वपूर्ण फैसला, एक साथ नहीं लगायी जा सकती आईपीसी की धारा 420 और 409

प्रयागराज। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420 और 406 एक साथ नहीं लगायी जा सकती। किसी केस में यह दोनों धाराएं एक साथ लगायी गयी हैं तो वह केस कानून की नजर में टिक नहीं सकता।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420 और 406 एक साथ नहीं लगायी जा सकती। किसी केस में यह दोनों धाराएं एक साथ लगायी गयी हैं तो वह केस कानून की नजर में टिक नहीं सकता। यह फैसला न्यायमूर्ति सौरभ श्रीवास्तव की एकलपीठ ने सुनाया है। कोर्ट ने मेरठ जिले के सिविल लाइंस थाने में दर्ज (राज्य बनाम अभिषेक गौतम) केस को संज्ञान लिए जाने और उस पर जारी समन को रद्द कर दिया है।

याचिकाकर्ता अभिषेक गौतम के खिलाफ धारा 420, 406, 504, 506 आईपीसी में थाना सिविल लाइन्स, जिला मेरठ में प्राथमिकी दर्ज है। अपर मुख्य न्यायाधीश कोर्ट ने याची के खिलाफ संज्ञान/समन आदेश जारी किया था। याची ने हाईकोर्ट में अर्जी दाखिल संज्ञान/समन आदेश सहित पूरी कार्यवाही रद्द करने की मांग की थी। याचिकाकर्ता की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता विजय गौतम और अधिवक्ता अतिप्रिया गौतम ने दलील दी कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में जो भी तथ्य दिए गये हैं वह गलत तथ्यों पर आधारित है। केस में दिए गए तथ्य मनमाने और मनगढ़ंत हैं, जिसका वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं है। राज्य की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता ने याचिकाकर्ता के अधिवक्ता के दलीलों का विरोध किया।

कोर्ट ने लैंडमार्क फैसले का किया जिक्र

कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट की ओर से दिल्ली रेस क्लब केस में सुनाए गए लैंडमार्क फैसले का जिक्र किया जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि आपराधिक विश्वासघात और धोखाधड़ी के बीच फर्क है। धोखाधड़ी के लिए गलत या गुमराह करने वाली बात कहते समय यानी शुरुआत से ही आपराधिक नीयत का होना जरूरी है। आपराधिक विश्वासघात में सिर्फ यह साबित करना काफी है कि कोई चीज भरोसे में सौंपी गई थी। इस तरह आपराधिक विश्वासघात के मामले में अपराधी को कानूनी तौर पर संपत्ति सौंपी जाती है और वह बेईमानी से उसका गलत इस्तेमाल करता है। जबकि धोखाधड़ी के मामले में अपराधी किसी व्यक्ति को धोखा देकर या बहकाकर कोई संपत्ति देने के लिए उकसाता है। ऐसी स्थिति में दोनों अपराध एक साथ नहीं हो सकते। कोर्ट ने याची के खिलाफ संज्ञान लिए जाने और उस पर जारी समन को रद्द कर दिया है।

तिहरा हत्याकांड: आरोपी हिमांशु के 22 पन्नों की सीडीआर से खुलेगा किशोरी की भूमिका का राज

प्रयागराज। नीबी कुकुरकटवा गांव में हुए तिहरे हत्याकांड की जांच अब कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) के जरिये नए मोड़ पर पहुंच गई है। पुलिस ने मुख्य आरोपी

हिमांशु यादव के मोबाइल नंबर की पिछले चार माह की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) निकलवाई है।

नीबी कुकुरकटवा गांव में हुए तिहरे हत्याकांड की जांच अब कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) के जरिये नए मोड़ पर पहुंच गई है। पुलिस ने मुख्य आरोपी हिमांशु यादव के मोबाइल नंबर की पिछले चार माह की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) निकलवाई है। करीब 22 पन्नों की इस रिपोर्ट में कई ऐसे नंबर सामने आए हैं, जिन्हें पुलिस संदिग्ध मान रही है। पुलिस को उम्मीद है कि सीडीआर के विश्लेषण से वारदात के पीछे की पूरी साजिश और इसमें कथित रूप से शामिल किशोरी की भूमिका पर भी स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

सूत्रों के अनुसार, तिहरे हत्याकांड के बाद से ही पुलिस प्रेम प्रसंग के एंगल को केंद्र में रखकर जांच कर रही है। जांच में सामने आया था कि मुख्य आरोपी हिमांशु यादव का एक किशोरी से संपर्क था और दोनों के बीच लगातार बातचीत होती थी। इसी आधार पर पुलिस ने आरोपी के मोबाइल नंबर की विस्तृत कॉल डिटेल निकलवाई, जिसमें पिछले चार माह के कॉल और अन्य संपर्कों का ब्यौरा शामिल है।

कई नंबर रडार पर

जांच में मिली सीडीआर में कई ऐसे मोबाइल नंबर मिले हैं, जिन पर वारदात से पहले और बाद में लगातार बातचीत हुई है। पुलिस इन नंबरों के धारकों की पहचान करने में जुटी है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि इन लोगों का हत्याकांड से कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध तो नहीं है। पुलिस तकनीकी साक्ष्यों के साथ इन नंबरों की लोकेशन और कॉल पैटर्न का भी विश्लेषण कर रही है।

किशोरी की भूमिका की हो रही पड़ताल

पुलिस सूत्रों का कहना है कि सीडीआर में मिले तथ्यों के आधार पर किशोरी की भूमिका की भी गहन जांच की जा रही है। जांच टीम यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि वारदात की योजना, आरोपियों की गतिविधियों अथवा घटना से जुड़े किसी अन्य पहलू की जानकारी उसे थी या नहीं। हालांकि, पुलिस अधिकारियों ने अभी तक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से इन्कार किया है और जांच पूरी होने तक टिप्पणी करने से बच रहे हैं।

और गिरफ्तारियों की संभावना

पुलिस का मानना है कि सीडीआर और अन्य तकनीकी साक्ष्यों की जांच के बाद मामले में कुछ और लोगों की संलिप्तता सामने आ सकती है। ऐसे में आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां भी हो सकती हैं। जांच टीम लगातार संदिग्ध नंबरों से जुड़े लोगों से पूछताछ कर रही है और उनके संबंधों की पड़ताल कर रही है। पुलिस अफसरों का कहना है कि तकनीकी साक्ष्यों, आरोपियों के बयान और अन्य उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अंतिम निष्कर्ष सामने आएगा।

पुलिस पूछताछ में मुख्य आरोपी हिमांशु यादव ने दावा किया था कि उसे हत्या के लिए किशोरी ने उकसाया था। हालांकि, जब पुलिस ने किशोरी से पूछताछ की तो उसने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को बेबुनियाद बताया। कहा कि हिमांशु से उसकी मुलाकात हुई थी, लेकिन उस दौरान दोनों के बीच केवल शादी को लेकर बातचीत हुई थी। उसने हत्या की किसी योजना या घटना की जानकारी से इन्कार किया है।

जमानत मंजूर होने के बाद गरीबी-लाचारी रिहाई में बाधक नहीं, हाईकोर्ट ने दिया अहम फैसला

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि कई मामलों में जमानत मंजूर होने के बाद गरीबी और सामाजिक लाचारी उसकी रिहाई में बाधक नहीं बन सकती। रिहाई के लिए उसे सभी मामलों में अलग–अलग जमानतदार पेश करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि कई मामलों में जमानत मंजूर होने के बाद गरीबी और सामाजिक लाचारी उसकी रिहाई में बाधक नहीं बन सकती। रिहाई के लिए उसे सभी मामलों में अलग–अलग जमानतदार पेश करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय की एकल पीठ ने कानपुर नगर के कमलेश कुमार उर्फ कमलेश फाइटर की याचिका स्वीकार कर ली। कोर्ट ने याची को 10 आपराधिक

मामलों में मिली जमानत के बाद एक लाख रुपये का एक व्यक्तिगत बॉन्ड दाखिल करने के साथ ही समान रकम के दो जमानतदार पेश करने पर सभी रिहाई का आदेश दिया है। अब याची को सभी मामलों में अलग–अलग बॉन्ड और जमानतदार पेश नहीं करने होंगे। हालांकि, यह शर्त रहेगी कि दो में से एक जमानतदार याची के परिवार का होगा, जबकि एक स्थानीय निवासी। कानपुर नगर के स्वरूप नगर, नजीराबाद, कर्नलगंज, जाजमऊ, रावतपुर, काकादेव, कोतवाली थाने में दर्ज 10 मुकदमों में आरोपी याची की जमानत मंजूर होने के बाद सभी मामलों में अलग–अलग जमानतदार पेश नहीं पेश करने के कारण रिहाई नहीं हो पा रही थी। इसके खिलाफ याची ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया।

याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि याची बेहद गरीब है। वह सभी 10 मामलों में अलग–अलग बॉन्ड और जमानतदार पेश करने में सक्षम नहीं है। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के हनी निषाद के मामले का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि न्याय की अवधारणा केवल कागजी आदेशों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसका व्यावहारिक रूप से सुलभ होना भी उतना ही आवश्यक है। यदि कोई आरोपी आर्थिक या सामाजिक लाचारी के कारण कई मुकदमों में अलग–अलग प्रतिभूति लाने में असमर्थ है तो महज इस तकनीकी आधार पर उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अनिश्चित काल के लिए बाधित नहीं रखा जा सकता। कानून का मकसद न्याय को सुगम बनाना है, आरोपी के लिए ऐसी परिस्थितियां खड़ी करना नहीं जो उसकी रिहाई के रास्ते को पूरी तरह बंद कर दें।

बसंत लाल सरोज बने कोटेदार संघ के जिला महामंत्री

प्रयागराज। प्रदेश अध्यक्ष राजेश तिवारी ने कोटेदार संघ फूलपुर ब्लॉक अध्यक्ष बसंत लाल सरोज को जिला प्रयागराज का महामंत्री नियुक्त किया है। नव–नियुक्त महामंत्री बसंत लाल सरोज का जिला प्रयागराज अध्यक्ष गणेश द्विवेदी ने माला पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने इस निर्णय को संगठन के लिए सकारात्मक और उत्साहवर्धक कदम बताया। इस अवसर पर मोहम्मद उमर, आनंद प्रसाद तिवारी, सुरेश पांडेय, कली देवी, कमला शंकर आदि रहे।

तीन चिताओं को दो लोगों ने दी मुखाग्नि

प्रयागराज। जेरा गंगा घाट पर बुधवार देर रात करीब तीन बजे तीनों शवों का अंतिम संस्कार किया गया। घाट पर अलग–अलग तीन चिताएं सजाई गई थीं। मुखाग्नि मृतका इंद्रावती देवी के इकलौते बेटे मुकेश गुप्ता और मृतका अमरावती देवी के पति नेब्बूलाल ने दी। मृतक श्याम लाल निसंतान थे, इसलिए इनके शव को भी मुखाग्नि नेब्बूलाल ने दी। इधर, तिहरे हत्याकांड के तीसरे दिन बृहस्पतिवार को भी घरों में चूल्हे नहीं जले। परिजन गम और गुस्से में बिलखते रहे। उनकी मांग है कि आरोपियों के घरों पर बुलडोजर चले और तत्काल एनकाउंटर किया जाए। आरोपी हिमांशु यादव के बाएं पैर में मुठभेड़ के दौरान लगी गोली से वे संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने कहा कि मुठभेड़ में आरोपी हिमांशु को मार गिराना था। मेजा थाना क्षेत्र के नीबी कुकुरकटवा गांव में सोमवार रात श्यामलाल गुप्ता (65), अमरावती देवी (55) और इंद्रावती देवी (60) की नृशंस हत्या कर दी गई थी। आरोप है कि घर की एक किशोरी से गांव का हिमांशु यादव जबरन शादी करना चाहता था। शादी में रोड़ा बनने पर आरोपी ने साथियों संग मिलकर घटना अंजाम दिया था। बुधवार को दिन भर आक्रोशित परिजनों ने घर के सामने तीनों शवों को रखकर आरोपियों के घरों पर बुलडोजर चलाए जाने और एनकाउंटर किए जाने की मांग को लेकर हंगामा किया था। रात में कार्रवाई के आश्वासन पर परिजन शांत हुए थे। बुधवार आधी रात के बाद जेरा गंगा घाट पर तीनों शवों का अंतिम संस्कार किया गया। घटना के तीसरे दिन बृहस्पतिवार को भी घरों में चूल्हे नहीं जले। परिजन गम और गुस्से में रहे। एहतियातन घर पर पुलिस फोर्स तैनात रही।

गर्भवती महिला की पिटाई मामले में कार्रवाई की मांग

प्रयागराज। थूलमा गांव में बीते 15 जून को आंगनबाड़ी केंद्र की जमीन की पैमाइश को लेकर लेखपालों व अनुसूचित जाति के बस्ती के लोगों के बीच हुई मारपीट में गर्भवती महिला सीमा एवं उसके पति राहुल गंभीर रूप से घायल हो गए थे। मामले में भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं ने उतरांव थाने पहुंचे और आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। घायल राहुल के भाई गणेश ने बताया कि भाभी सीमा की हालत गंभीर बनी हुई है। इलाज के

लिए उन्हें आईसीयू में रखा गया है। आरोप है कि प्रार्थना पत्र देने के बाद भी उतरांव पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज नहीं की।

15 जून को शाम के समय थूलमा गांव में आंगनबाड़ी केंद्र के लिए जमीन का सीमांकन करने गई राजस्व टीम व अनुसूचित जाति के बस्ती के लोगों के बीच विवाद हो गया था। इस दौरान राहुल सहित कई ग्रामीणों ने विरोध किया था। मारपीट में लेखपाल अजय तिवारी व दूसरे पक्ष के राहुल, उनकी पत्नी सीमा के सिर में गंभीर चोटें आई थी। बृहस्पतिवार को आजाद समाज पार्टी भीम आर्मी के जिलाध्यक्ष राम बहादुर वर्मा की अगुवाई में कार्यकर्ता थाने पहुंचे। जिला प्रभारी नीरज पासी, अवधेश मौर्य, विजय सरोज, हनी वर्मा, रमन वर्मा ने उतरांव थानाध्यक्ष विनय कुमार से कार्रवाई की मांग की है। एसीपी हंडिया शेषधर पांडेय ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। विधिक कार्रवाई की जाएगी।

एक साथ जलीं दो दोस्तों की चिताएं

प्रयागराज। थाना क्षेत्र में बाइक और बोलेरो की टक्कर में घायल दूसरे युवक की इलाज के दौरान बुधवार रात मौत हो गई। बृहस्पतिवार को दोनों युवकों के पोस्टमार्टम के बाद शव गांव पहुंचा तो परिजनों में आक्रोश उत्पन्न हो गया। गुस्साए ग्रामीणों ने प्रतापपुर–घूरपुर मार्ग पर दोनों शवों को रखकर चक्काजाम कर दिया। बुधवार की दोपहर पडुवा गांव निवासी गुड्डू उर्फ विजय (25) और बृजेश कुमार (25) की बाइक और बोलेरो की सोपारी बाग के पास टक्कर हो गई थी। विजय की मौके पर ही मौत हो गई थी। इलाज के दौरान बृजेश की भी मौत हो गई। बृहस्पतिवार को पोस्टमार्टम के बाद देर शाम दोनों शव पडुवा गांव पहुंचा तो ग्रामीण और रिश्तेदार इकट्ठा थे। परिजन दोनों शव को पडुवा चौराहा पर रख मुआवजे की मांग करते हुए चक्काजाम कर दिया। सूचना मिलते ही लालापुर थानाध्यक्ष अनुभव सिंह और एसीपी बारा वेद व्यास मिश्र मौके पर पहुंचे। रात करीब आठ बजे एसडीएम बारा डॉ. गणेश कन्नोजिया और एडी डीसीपी विजय आनंद मौके पर पहुंचे। इस दौरान परिजन 20–20 लाख रुपये सहयोग राशि और भूमि का आवासीय पट्टा दिए जाने की मांग की। इस पर अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि सरकार की ओर से हर संभव मदद की जाएगी। इसके बाद चक्काजाम समाप्त हुआ।

बहन की शादी से पहले उठी भाई की अर्थी

मृतक विजय की बहन की शादी आगामी 21 जून को तय थी। गुड्डू और बृजेश इसी मांगलिक कार्य के सिलसिले में लालापुर के लिए निकले थे। बहन की विदाई का सामान तो नहीं आया लेकिन भाई के कफन का सामान आ गया।

गैंगस्टर के अभियुक्त को चोरी की बाइक के साथ पकड़ा

प्रयागराज। आनापुर पुलिस ने एक गैंगस्टर अभियुक्त को चोरी की मोटरसाइकिल और तमंचे के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि बृहस्पतिवार सुबह करीब सात बजे टीम रामनगर–मांदुपुर के पास संदिग्धों की तलाश कर रही थी। तभी एक व्यक्ति पुलिस को देखकर भागने लगा। पुलिस ने घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया। पूछताछ में उसने अपना नाम अंकित गौतम, निवासी कटरा कौड़िहार, थाना नवाबगंज बताया। बरामद मोटरसाइकिल कुछ दिन पहले चोरी हुई थी। पुलिस ने उसके पास से एक तमंचा भी बरामद किया है। कोतवाल पंकज अवस्थी ने बताया कि अंकित पर कई आपराधिक प्राथमिकी दर्ज हैं।

स्टिंग ऑपरेशन पर भड़कीं मायावती, कहा, बसपा को बदनाम करने की साजिश

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की मुखिया मायावती ने एक निजी मीडिया हाउस द्वारा किए गए स्टिंग ऑपरेशन को लेकर तीखा हमला बोला है। उन्होंने इसे बसपा और उसके नेतृत्व को बदनाम करने की साजिश करार दिया। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि बसपा देश में बहुजन समाज और अपरकास्ट समाज के गरीब, शोषित–पीड़ित व उपेक्षितों द्वारा उनके संवैधानिक हक व न्याय के लिए परमपूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के बताए रास्तों पर चलने वाली ऽसर्वजन हिताय व सर्वजन सुखायऽ की सच्ची और ईमानदार अंबेडकरवादी पार्टी है। उन्होंने कहा कि बसपा दूसरी पार्टियों की तरह बड़े–बड़े पूंजीपतियों व धन्नासेठों के सहारे और उनके इशारे पर नहीं चलती है, बल्कि अपने लोगों के ही तन, मन और धन के बलबूते पर चलती है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह बात संकीर्ण, जातिवादी, सांप्रदायिक व पूंजीवादी ताकतों को फूटी कौड़ी नहीं सुहाती है। इसीलिए वे समय–समय पर और खासकर चुनाव के नजदीक आने पर किस्म–किस्म के हथकंडे इस्तेमाल करके बीएसपी पार्टी व मूवमेंट को तथा उसके आयरन लेडी नेतृत्व को भी बदनाम करने में लगे रहते हैं। मायावती ने कहा कि मीडिया का एक वर्ग दूसरी पार्टियों की चुनावी जुगाड़ आदि पर से लोगों का ध्यान बांटने तथा उन पर पर्दा डालने के लिए बसपा पार्टी उम्मीदवार के चयन को लेकर सवालिया निशान खड़े करता रहता है। उन्होंने साफ किया कि बसपा को जो भी आर्थिक सहयोग हासिल होता है, वह पार्टी उम्मीदवार की जीत सुनिश्चित करने पर ही कानूनी तौर से ज्यादातर खर्च कर दिया जाता है, जो किसी से भी छिपा हुआ नहीं है। फिर भी उसको लेकर षड्यंत्र के तहत गुमराह

करने वाली तरह–तरह की गलत बातें व अफवाहें फैलाना मीडिया को शोभा नहीं देता है। बसपा प्रमुख ने बताया कि केवल बसपा यूपी स्टेट यूनिट के अध्यक्ष विश्वनाथ पाल ही नहीं बल्कि पार्टी के अन्य सभी छोटे–बड़े पदाधिकारी व कार्यकर्ता भी इस समय पार्टी संगठन की मजबूती तथा पार्टी के जनाधार को सर्वसमाज में बढ़ाने के साथ–साथ आगामी यूपी विधानसभा आमचुनाव के लिए पार्टी उम्मीदवारों की संभावित सूची बनाने तथा उनकी ठोस स्क्रीनिंग करने में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी की उम्मीदवारी को लेकर मिलने वालों से उनकी सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक हैसियत के साथ ही उनके पार्टी के प्रति वफादारी व टिकाऊपन को भांपने के लिए कोर्ट में जिरह की तरह तरह–तरह के सवाल–जवाब भी किए जाते हैं। मायावती ने कहा कि इसकी गहराई में गए बिना ही उसे उसके पूरे फेस वैल्यू पर अन्यथा लेना उचित नहीं है। मायावती ने मीडिया से अनुरोध किया और पार्टी के लोगों से अपील की कि वे विरोधी पार्टियों के ऐसे प्रायोजित किसी भी षड्यंत्र का शिकार होकर गुमराह न हों, बल्कि अपने मिशन 2027 के लक्ष्य में पूरे जी–जान से लगे रहें। उन्होंने कहा कि बसपा की जबरदस्त तैयारी को देखकर ही विरोधियों की नींद उड़ी हुई है। गौरतलब है कि एक निजी मीडिया हाउस द्वारा बसपा के प्रदेश अध्यक्ष समेत कुछ पदाधिकारियों का कथित तौर पर स्टिंग ऑपरेशन किया गया है। जिसमें दावा किया गया है कि बहनजी से मिलेंगे तो पांच लाख रुपए लेकर चलना। वहां बताएंगे– आप विधायक का टिकट चाहते हैं। कथित स्टिंग में पदाधिकारी द्वारा दावा किया गया है कि इन 5 लाख रुपए का कोई हिसाब–किताब नहीं रहेगा। टिकट के लिए तीन करोड़ 35 लाख रुपए देने होंगे। अभी एक–डेढ़ करोड़ जमा कर दीजिए, जो बचेगा उसके लिए एक–डेढ़ महीने का समय मिलेगा। सरकार बनती है तो गारंटी है– आपको मंत्री बनवाएंगे।

तबादला नीति में अनियमितता व मनमानी से ग्राम्य विकास मंत्री नाराज

लखनऊ (संवाददाता)। उ0प्र0 सरकार की जीरो टालरेंस नीति के तहत कार्य करने की नीति का पालन न होने पर ग्राम्य विकास विभाग एवं समग्र ग्राम विकास मंत्री अपने ही विभाग के प्रमुख सचिव पर काफी नाराज हो गयी। राज्य मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम ने अपने ही विभाग के प्रमुख सचिव पर विभाग में स्थानान्तरण नीति का पालन न करने तथा स्थानान्तरण में मनमानी करने के गंभीर आरोप लगाये तथ तुरंत स्पष्टीकरण मांगा। राज्य मंत्री द्वारा प्रमुख सचिव, ग्राम विकास पर लगाये आरोपों के अनुसार अधिकारी व कर्मचारी के तबादले नियमानुसार नहीं किये गये। तथा इस संबध में जनप्रतिनिधियों की अनेक शिकायते आने के बाद ही स्पष्टीकरण व जबाव मांगा गया। प्रमुख सचिव पर यह भी आरोप है कि उन्होने किये गये तबादलों में मुख्यमंत्री की स्वीकृति भी नही ली और न ही तबादला नीति की समय सीमा को भी नजरअंदाज किया गया। स्थानांतरण नीति के अनुसार जिले में तैनात अधिकारी व कर्मचारी के लिये तीन वर्ष, मण्डल के लिये सात वर्ष पश्चात की समय सीमा मान्य है। परंतु विभाग में किये गये तबादलों में इसका पालन ही नही किया गया। प्रमुख सचिव द्वारा मनमानी करने पर राज्य मंत्री ने स्पष्टीकरण मांगा उन्होने इसमें भ्रष्टाचार की भी आशंका जतायी।

अधिकारियों की लापरवाही से रतजगा करने को मजबूर बुद्धेश्वर क्षेत्र के हजारों निवासी

लखनऊ (संवाददाता)। एक तरफ उ0प्र0 विद्युत उत्पादन में नंबर एक पर है। दूसरे राज्यो को बिजली दे रहा है। वही स्मार्ट सिटी लखऊ के बुद्धेश्वर क्षेत्र के आदर्श विहार भूहर तथा बुद्धेश्वर के आस–पास के इलाको के हजारो निवासी भीषण गर्मी में मार्च के महीने से ही बिजली का संकट झेल रहे है। कई बार हो चुका है कि रात में लाइट चली जाती है और पूरी रात बती जाने के बाद सुबह दस बजे तक नही आ पाती है। जिससे लोग रात भर जाग–जाग कर रात काटते है। बिजली न आने से सुबह पानी का संकट भी झेलने को मजबूर है। समस्या केवल बिजली जाने की नही है समस्या संबंधित एसडीओ व अधिकारियों की लापरवाही की है। सूत्रों के अनुसार आदर्श विहार फीडर में दो केबल है। दोनों ही खराब है। विभाग के ही कर्मचारी के अनुसार एक केबल को कभी रिपेयर नहीं किया गया और दूसरी मार्च के महीने से ही फाल्ट में। यदि बिजली जाती भी है तो दूसरी केबल से बिजली की सप्लाई तुरंत दी जा सकती है। बाकी उप–केन्द्रों पर ऐसा ही किया जाता है। सरकार ने करोड़ों खर्च कर नया पावर हाउस भी बनवा दिया परंतु अधिकारियों की लापरवाही से समस्या जस की तस बनी हुयी है। जिससे सरकार और विभाग की छवि धूमिल हो रही है। भुक्तभोगियों के अनुसार एक एफसीआई विद्युत सूचना ग्रुप बना है एसडीओ साहब उस पर बिजली आने का समय बता कर फोन बंद कर देते है और इंतजार में पूरी रात कट जाती है। बताते चल कि यह वही क्षेत्र है जिसमें कुछ दिन पहले ही खुलेआम घूस मांगते हये का वीडियो जबरदस्त वायरल हुआ था। विभाग के ही सूत्र बताते है अधिकारी संविदाकमियों से पैसों की डिमांड करते है। अधिकारी पैसे कमाने में व्यस्त है तो कर्मचारी दलाली करने में। इससे एक तरफ सरकार की छवि खराब हो रही है वही दूसरी तरफ जनता परेशान होकर सरकार को कोस रही है।

वास्को–डी–गामा से लेकर आधुनिक भारत तक की स्वाद यात्रा को समर्पित विशेष फूड फेस्टिवल

लखनऊ (संवाददाता)। जब खोजकर्ता, व्यापारी और विभिन्न संस्कृतियाँ भारत के तटों तक पहुँचीं, तो वे केवल नए व्यापारिक मार्ग ही नहीं लाए, बल्कि अपने साथ नए स्वाद, सामग्री, पाक–कलाएँ और विचार भी लेकर आए, जो धीरे–धीरे भारत की समृद्ध पाक यात्रा का हिस्सा बन गए। वास्को–डी–गामा के ऐतिहासिक आगमन और भारतीय तटीय भोजन पर पुर्तगाली प्रभाव से लेकर ब्रिटिश काल की उन प्रेरणाओं तक, जिन्होंने हमारी खान–पान की अनेक परंपराओं को आकार दिया, भारत की खाद्य संस्कृति हमेशा आदान–प्रदान, अनुकूलन और रचनात्मकता के माध्यम से विकसित होती रही है।एवियान लक्स सेरेनिटी के जनरल मैनेजर आकाश सिंह राठौर ने कहा, ष्द कोस्टल पाइरेट्स केवल एक फूड फेस्टिवल नहीं, बल्कि भारत की समृद्ध तटीय पाक विरासत और सांस्कृतिक विविधता का उत्सव है। हमारा उद्देश्य अतिथियों को ऐसा अनुभव प्रदान करना है, जहाँ वे स्वाद के माध्यम से इतिहास, परंपरा और वैश्विक प्रभावों की अनूठी यात्रा का आनंद ले सकें।ष्वहीं, असिस्टेंट फूड एंड बेवरेज (एफ़&बी) मैनेजर सुनीत कुमार सिंह ने बताया, ष्इस फेस्टिवल के लिए विशेष रूप से ऐसे व्यंजनों का चयन किया गया है जो भारत के विभिन्न तटीय क्षेत्रों की विशिष्ट पहचान को दर्शाते हैं। प्रत्येक डिश को पारंपरिक स्वाद, प्रामाणिक सामग्री और आधुनिक प्रस्तुति के संतुलन के साथ तैयार किया गया है, ताकि मेहमानों को एक यादगार और प्रीमियम डाइनिंग अनुभव मिल सके।एवियान लक्स सेरेनिटी के शेफ गौरीश सिंह ने बताया कि फूड फेस्टिवल में परोसे जा रहे।

यूपी कांग्रेस अध्यक्ष ने राहुल गांधी के जन्मदिन पर रुद्राभिषेक किया

अजय राय बोले, चढ़ावा चोर साबित हो गए, एसआईटी पूरी तरह फ्रॉड

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के जन्मदिन पर रुद्राभिषेक करने के बाद यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने राममंदिर चढ़ावा मामले में बयान दिया है। उन्होंने कहा हम रामभक्त हैं, इनकी तरह चंदा चोर और चढ़ावा चोर नहीं हैं। ये पूरी तरीके से चढ़ावा चोर साबित हो गए। योगी से कहना चाहूंगा कि थोड़ा भी गेरुआ वस्त्र का सम्मान हो तो आप तुरंत उच्च न्यायालय से जांच कराइए। जो एसआईटी जांच कर रही है, वह पूरी तरह से बोगस और फ्रॉड है। अजय राय ने कहा कि आज लखनऊ ही नहीं, पूरे देशभर में जननायक

राहुल गांधी का जन्मदिन मनाया जा रहा है। राहुल गांधी शुरू से ही अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं। राहुल गांधी ने जिस तरीके से संविधान एक हाथ में लेकर, एक हाथ में फरसा लेकर लोगों के लिए लड़ रहे हैं, अन्याय के खिलाफ जंग लड़ रहे हैं। उसके लिए हम सभी लोग उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं। अयोध्या में एसआईटी जांच पर अजय राय ने कहा कि पूरी तरीके से एसआईटी बोगस है। उसमें शामिल जो अधिकारी है विजय विश्वास पंत, उनके ही अनाउंसमेंट पर प्रयागराज (महाकुंभ) में भगदड़ हुई थी। ऐसे अधिकारी कोई भी जांच नहीं कर पाएंगे। मुख्यमंत्री जिस तरीके से कांग्रेस को लेकर बयान दे रहे हैं, वह उनकी हताशा और निराशा है। अजय राय तय कार्यक्रम के मुताबिक, हनुमंत धाम सुबह 11.30 बजे पहुंचे। यहां पंडितों ने मंत्रोच्चार के साथ उनसे रुद्राभिषेक कराया। अजय राय ने शिवलिंग पर पंचगव्य चढ़ाया। इसके बाद जल से अभिषेक किया। यहां से अजय राय सीधे पार्टी मुख्यालय निकल गए। दोपहर 2 बजे अजय राय प्रदेश कांग्रेस कमेटी मुख्यालय पहुंचेंगे। वहां नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। कार्यक्रम में कांग्रेस पदाधिकारी, कार्यकर्ता और समर्थक भी मौजूद रहेंगे।

अखिलेश यादव का सीएम पर तंज, किसी की रिकॉर्ड तोड़ 'अयोध्या' यात्राओं की पड़ताल के लिए भी बनानी चाहिए एक एसआईटी

लखनऊ (संवाददाता)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नाम लिये बिना कहा कि अयोध्या की किसी की रिकॉर्ड–तोड़ यात्राओं की पड़ताल के लिए भी एक एसआईटी (विशेष जांच दल) का गठन होना चाहिये। सपा प्रमुख ने परोक्ष रूप से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर हमला करते हुये अपने एक्स खाते पर एक पोस्ट में कहा एक एसआईटी, किसी की रिकॉर्ड तोड़ अयोध्या यात्राओं की पड़ताल के लिए भी बनानी चाहिए। अयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर में दान पात्र और वित्तीय प्रबंधन में गड़बड़ी का मामला सामने आने के बाद पहली बार अयोध्या के दौरे पर शुक्रवार को पहुंचे योगी ने समाजवादी पार्टी पर रामभक्तों पर गोलियां चलवाने और जय श्रीराम का नारा लगाने पर लाठियां भाजने का आरोप लगाया। सात जून को अखिलेश यादव ने मीडिया रिपोर्ट्स का हवाला देते हुए दावा किया था कि मंदिर को मिले दान के करोड़ों रुपये गायब हैं। उन्होंने अदालतों से मामले का संज्ञान लेने का आग्रह किया था। मंदिर के दानपात्र के गबन और वित्तीय कुप्रबंधन से जुड़े आरोपों की जांच के श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अनुरोध पर योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत के नेतृत्व में 13 जून को तीन सदस्यीय एसआईटी का गठन किया था।

यूपीएसएसएससी पहुंचे युवाओं ने लाइब्रेरियन की वैकेंसी मांगी

लखनऊ (संवाददाता)। कई जिलों से लखनऊ पहुंचे 50 से ज्यादा युवाओं ने लाइब्रेरियन की वैकेंसी की मांग की। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (यूपीएसएसएससी) के मुख्यालय के बाहर आयोग सचिव से मिलने को लेकर अड़े रहे। युवाओं ने कहा कि 2016 से लाइब्रेरियन की कोई भर्ती नहीं हुई। हम लोगों ने डिग्री लेकर करियर बर्बाद कर लिया। अप्रशिक्षित लोग लाइब्रेरियां चला रहे हैं। उनके पास कोई डिग्री नहीं है। हम डिग्री लेकर बेकार घूम रहे हैं। सरकार से मांग की जाती है कि वैकेंसी निकाले। पीईटी–2025 के आधार पर नई वैकेंसी निकालेंगे तो ठीक रहेगा। आगे आने वाले बच्चों को भी लाइब्रेरी साइंस कोर्स करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। अन्यथा यह कोर्स ही बंद करा दिया जाए। झांसी से आए संजय जैन ने कहा यूपी में 2006 में लाइब्रेरी एक्ट बना हुआ था। उसका कहीं भी पालन नहीं हो रहा है। लाइब्रेरी ऐसे व्यक्तियों से चलवाई जा रही हैं, जो कहीं से भी डिग्री लिए हुए नहीं हैं। वे कुशल भी नहीं हैं। हम लोगों ने जो लाइब्रेरी की डिग्री ली है, वह सब अपना करियर बर्बाद किया है। हम लोग यह चाहते हैं कि लाइब्रेरियन साइंस यानी पुस्तकालय विज्ञान का कोर्स बंद करा दिया जाए या हमारे लिए नई वैकेंसी निकाली जाए। इससे आने वाले बच्चों के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। दिल्ली से आए गौरव राणा ने कहा पीईटी 2021, 2022, 2025 भी दे दिया लेकिन अभी तक लाइब्रेरियन की वैकेंसी नहीं आई है। यहां हम आते हैं तो सचिव सर से मिलने नहीं दिया जाता। कर्मचारियों से मिलाकर वापस भेज देते हैं। कभी बताते हैं अधियाचन है तो कभी बताते हैं अधियाचन नहीं है। इस तरह से हम दर–दर भटक रहे हैं। मैंने लाइब्रेरियन के कोर्स किए हैं लेकिन वैकेंसी नहीं आ रही है। महाराजगंज से आए अमित कपूर चौधरी ने कहा हम लोग लाइब्रेरियन वैकेंसी की मांग के लिए यहां आए हुए हैं। इससे पहले 2 जून और उससे भी पहले 14 मई को यहां आए थे। यहां सचिव साहब से मिलने नहीं दिया जाता। असिस्टेंट लोग हमसे बात करते हैं। उन लोगों ने बताया था कि 362 पोस्ट का अधियाचना हमारे पास है। अगले महीने वैकेंसी देंगे बोलकर टाला जा रहा है। पिछली बार 2016 में वैकेंसी आई थी। हम लोग वैकेंसी के लिए कोर्स करके डिग्री रखे हुए हैं। अभ्यर्थियों ने बताया कि बाराबंकी निवासी अमरीश राव की ओर से 2022 में राज्यपाल को भेजे गए ज्ञापन और उसके बाद वर्ष 2025 में भेजे गए अनुस्मारक में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम–2006 को प्रभावी ढंग से लागू करने की मांग की गई थी। उनका कहना है कि चार वर्ष बीतने के बाद भी इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है, जबकि अधिनियम में तहत जिला पुस्तकालय प्राधिकरण के गठन और पुस्तकालयों के विकास का स्पष्ट प्रावधान है। प्रदर्शन कर रहे युवाओं का कहना था कि प्रदेश के जिला पुस्तकालय संसाधनों के अभाव में बदहाल स्थिति में हैं। पुस्तकालय विज्ञान में डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त हजारों प्रशिक्षित युवा वर्षों से भर्ती का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने मांग की कि राजकीय जिला पुस्तकालयों और माध्यमिक विद्यालयों में रिक्त पदों पर प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की नियुक्ति की जाए।

खुशबूमयी किताब

गेंदा और गुलाब का, समझो लब्बे लुआब।
पंखुड़ियाँ जिसकी बनी, खुशबूमयी किताब।
खुशबूमयी किताब, बात गहरी सिखलाती।
सबको दें मुस्कान, अन्त तक हैं समझाती।
सुन लो कहें प्रदीप, कहे फूलों का खेला।
मधुरम प्यारी बात, बताता प्यारा गेंदा।।

शोभा बन उद्यान का, देते हैं जो ज्ञान।
फूल उसे दुनिया कहे, है हरि का वरदान।
है हरि का वरदान, बताकर सबको गेंदा।
सजा रहा घरबार, हर्ष का बनकर मेला।
सुन लो कहें प्रदीप, जगत का कोना–कोना।
महकाते हैं फूल, घरों की बनकर शोभा।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

वॉलीबाल रेफरी परीक्षा जुलाई में

आज से मिलेगा वॉलीबाल रेफरी परीक्षा का आवेदन फॉर्म, 30 जून तक फॉर्म भरकर जमा करने की अंतिम तिथि है

प्रयागराज। इस वर्ष वॉलीबाल खेल की रेफरी परीक्षा अगले माह जुलाई 2026 में होगी। उक्त आशय की जानकारी देते हुए डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन (डीवीए),प्रयागराज के अवैतनिक महासचिव आर.पी.शुक्ला ने बताया कि वॉलीबाल के पूर्व खिलाड़ी जो कि रेफरी परीक्षा देने के इच्छुक है,वे डी.वी.ए. कार्यालय में संपर्क करके आज 20 जून 2026 से आवेदन फार्म प्राप्त कर सकते हैं। आवेदन फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 30 जून 2026 है,जिसकी लिखित परीक्षा अगले माह जुलाई 2026 में संपन्न होगी। उसी क्रम में लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों की प्रयोगात्मक (प्रैक्टिकल) परीक्षा भी होगी। मेरिट के आधार पर परीक्षा फल घोषित किया जाएगा। आवेदन फॉर्म भरने वाले खिलाड़ियों की उम्र 25 से 40 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा संबंधित खेल में कम से कम जिला स्तर का वॉलीबाल खिलाड़ी होना अनिवार्य होगा। वॉलीबाल खेल के नेशनल प्लेयर के साथ–साथ स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा में डिप्लोमा एवं डिग्री हासिल करने वाले अभ्यर्थियों को वरीयता दी जा सकेगी।

VolleyBall Referee Exam.

विश्व योग दिवस पर 15वाँ सामाजिक सत्याग्रह भयहरणनाथ धाम में 21 जून को

—कब्जा मुक्ति हेतु 15 मार्च से जारी है रचनात्मक सामाजिक प्रयास

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम को कब्जा एवं मनमानेपन से मुक्त कराने हेतु गत 15 मार्च 2026 से प्रत्येक रविवार को रचनात्मक सामाजिक प्रयास निरंतर जारी है। इसी कड़ी में विश्व योग दिवस के पावन अवसर पर रविवार, 21 जून को 15वाँ सामाजिक सत्याग्रह आयोजित होगा।

यह जानकारी देते हुए धाम की प्रबन्ध संस्था भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान के महासचिव समाज शेखर ने बताया कि क्षेत्र एवं समाज के प्रबुद्ध नागरिक तथा भक्तगण अपने संकल्प के अनुसार यह पंद्रहवाँ सत्याग्रह पूर्ण करेंगे।

उन्होंने बताया कि सत्याग्रह पूर्णतः अहिंसक, शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक दायरे में होगा। उद्देश्य केवल इतना है कि ष्सबके लिए खुला है मंदिर, यह है हमारा ध्येयष। सभी का विश्वास है कि भोलेनाथ के समक्ष 100 दिन का यह सत्याग्रह रूपी तप खाली नहीं जायेगा।

प्रबन्ध संस्था ने जिलाधिकारी महोदय से मांग की है कि राजस्व विभाग की टीम भेजकर सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें, जिससे बरसात से पूर्व कब्जा मुक्ति की प्रक्रिया यथाशीघ्र सम्पन्न हो सके।

अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल एवं कार्यवाहक अध्यक्ष श्री लाल जी सिंह ने समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों एवं क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग कर धर्म एवं सत्य की रक्षा में सहयोग की अपील की है।

उत्तर मध्य रेलवे

ई टेंडर निविदा सूचना संख्याः GEM/2026/B/7673996 | दिनांक: 17.06.2026

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज, द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए निर्धारित प्रपत्र में पर्याप्त अनुभव एवं वित्तीय क्षमतावान प्रतिष्ठित ठेकेदारों से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है, जिसका विवरण निम्नलिखित है:-

कार्य का नामः BMU, MRE, SYWN, BRE, BDNP, SJT & MNJ रेलवे स्टेशनों पर तीन साल के लिए पूरी सफ़ाई व्यवस्था (सफ़ाई, झाडू-पोछा, कचरा बीनना, कचरा इकट्ठा करना और उसका निपटान आदि) - आउटकम एक्टिविटी बेस्ड - के लिए निविदा।

निविदा सिस्टमः दो पैकेट सिस्टम

ठेके की अवधिः तीन वर्ष

कार्य का अनुमानित लागत (जी.एस.टी. सहित): ₹ 5,47,01,535.79

धरोहर राशिः ₹ 10,94,100/-

निविदा बंद होने की तिथि एवं समयः 31.07.2026 15:00

निविदा खोलने की तिथि एवं समयः 31.07.2026 15:30

नोटः- (1) उपरोक्त ई निविदा का पूरा विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) Gem वेबसाइट पर प्रकाशन की तिथि से वेबसाइट www.gem.gov.in पर टेंडर खुलने की तिथि तक उपलब्ध है। (2) उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप से बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेंडरों को चाहिए कि वे अपने आपको Gem की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। (3) संलग्न किये जाने वाले सभी दस्तावेज़ निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिए। (4) ई निविदा फ़ार्म सभी निविदाकारों को निशुल्क जारी किये जायेगें। (5) किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिए Gem की वेबसाइट की हेल्पलाइन से संपर्क किया जा सकता है। 1370/26 (A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय........

सुरक्षित सिरप

भारत में छोटे–मोटे रोगों के उपचार के लिये मेडिकल स्टोर से दवा लेकर खाने की लोगों में आदत पायी जाती है। यह जाने बगैर कि घरेलू नीम–हकीमी जान को खतरे में भी डाल सकती है। भारत तथा कई अन्य देशों में देश में बने सिरप के सेवन से बच्चों की मृत्यु से दवा उद्योग पर आंच आई थी। यही वजह है कि खांसी व अन्य दवाओं के सिरप की बिना डॉक्टर की पर्ची के बिक्री पर रोक लगाने का फैसला सरकार को लेना पड़ा है। निश्चय ही केंद्र सरकार द्वारा यह फैसला सही समय पर लिया गया जरूरी कदम कहा जा सकता है। निस्संदेह, सरकार के इस कदम को सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी सुरक्षा को मजबूत करने की बड़ी कोशिश का हिस्सा माना जाना चाहिए। हाल की कुछ दुखद घटनाओं के घातक परिणामों के मद्देनजर लोगों को हर खांसी–जुकाम आदि छोटे–मोटे रोगों के लिये खुद दवा लेने की आदत से परहेज करना चाहिए। दरअसल, भारत में लंबे समय से ऐसी धारणा रही है कि ये सिरप आदि दवाइयां मौसमी बीमारियों के लिये नुकसान–रहित होती हैं। लेकिन पिछले कुछ समय में हुई दुखद घटनाओं ने इनके अंधाधुंध प्रयोग और दवा निर्माण से जुड़े कमजोर नियमन को ही उजागर किया है। सरकार को ये कदम अनेक दुखद घटनाओं के सामने आने के बाद उठाना पड़ा है, जब इन दवाओं के उत्पादन में गंभीर खामियां सामने आईं। कुछ समय पहले अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आरोप लगाए गए थे कि गैम्बिया,उज्बेकिस्तान और कैमरून आदि देशों में दर्जनों बच्चों की मौत भारत में बने दूषित खांसी के सिरप के उपयोग से हुई थी। इतना ही नहीं, देश के भीतर भी दूषित दवाओं से जुड़ी मौतों की खबरों ने इन सिरपों की गुणवत्ता नियमन, परीक्षण और निगरानी पर गाहे–बगाहे सवाल उठाए हैं। निश्चित रूप से इन दुखद घटनाओं ने दुनिया भर में सस्ती दवाओं की आपूर्ति करने वाले भारत की प्रतिष्ठा को नुकसान ही पहुंचाया है। सरकार की हालिया पहल को इसी दिशा में उठाया गए कदम के रूप में देखना चाहिए। लेकिन सवाल सिर्फ कफ सिरप का ही नहीं है। आम भारतीयों की आदत में शुमार है कि लोग अक्सर खांसी–बुखार की दवाइयां यह जाने बगैर सेवन करते हैं कि उनमें क्या–क्या मिला है। यह भी कि इनके उपयोग से हमारे शरीर में क्या–क्या साइड–इफेक्ट हो सकते हैं। यह भी जानने की कोशिश नहीं होती है कि इन सिरप आदि को अन्य दवाओं के साथ लेने से क्या–क्या नकारात्मक प्रतिक्रिया हमारे शरीर में हो सकती है। बहरहाल, अब जब सरकार ने तय कर दिया है कि अनुभवी डॉक्टर की सलाह से ही सिरप आदि खरीदे जा सकते हैं तो मरीजों के तिमारदार तय कर सकेंगे कि किस कंपनी की गुणध्वत्ता वाली दवा खरीदनी है। जिससे न केवल इलाज सही हो सकेगा बल्कि यह भी सुनिश्चित हो सकेगा कि मरीज के शरीर में कोई अन्य बीमारी छूट न जाए। लेकिन हकीकत यह भी है कि सिर्फ कठोर कानून बनाने मात्र से ही बेहतर परिणाम हासिल नहीं किए जा सकते हैं। भारत में पहले से ही दवाइयों की बिक्री के नियमन से जुड़े कानूनों की कमी नहीं है। इसके बावजूद डॉक्टर की पर्ची पर ही उपलब्ध होने वाली दवाइयां अक्सर बिना पर्याप्त जांच–पड़ताल के ही आसानी से मेडिकल स्टोरों में मिल जाया करती हैं। दरअसल, असली चुनौती कानून का अनुपालन सख्ती से करने की होती है। जब तक देश में तमाम फार्मेसियों की नियमित जांच नहीं होती, कानून का उल्लंघन करने पर कड़े दंड का प्रावधान नहीं होता, तब नये नियम–कानून महज अच्छे इरादे वाले निर्देश मात्र बनकर रह जाएंगे। ऐसे में इस प्रयास का जमीनी असर बेहद कम ही रह पायेगा। वास्तव में देश में दवा उत्पादक इकाइयों की नियमित निगरानी, राज्यों में सशक्त ड्रग–कंट्रोल अथॉरिटी, नियमित गुणवत्ता जांच के अलावा जन चेतना अभियान चलाने की सख्त जरूरत है। लोगों को बिना डॉक्टर के परामर्श के दवा लेने के खतरों से अवगत कराना होगा। निस्संदेह, सरकार द्वारा चिकित्सक के परामर्श पर ही सिरप आदि की उपलब्धता से जुड़े नियम की कामयाबी इस बात पर निर्भर करेगी कि हम किस सीमा तक एक जवाबदेह सिस्टम बना पाते हैं।

खरगे के सवाल, भागवत के जवाब

कर्नाटक के गृहमंत्री प्रियांक खरगे ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से कुछ आधिकारिक जानकारियां उपलब्ध कराने कहा है, जिस पर देश की सियासत में नया विवाद खड़ा करने की कोशिश की जा रही है। 1925 में बना संघ इस समय पूरे देश में घूम–घूमकर अपनी शताब्दी का उत्सव मना रहा है। जिस संस्था ने सौ सालों का सफर तय किया हो, उसके पास दिखाने–बताने के लिए बहुत कुछ होगा। संघ कोई अमूर्त कल्पना, आभासी अवधारणा तो नहीं है, जिसके बारे में ठोस तौर पर कुछ कहा न जा सके। नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का अच्छा–खासा मुख्यालय है, हर साल यहां संघ का स्थापना दिवस दशहरे पर मनाया जाता है। इसमें हिंदुत्व की तरफ झुकाव रखने वाली देश की नामचीन हस्तियां शिरकत करती हैं। संघ के बाकायदा पदाधिकारी बने हुए हैं, सरसंघचालक से लेकर स्वयंसेवक तक सबकी जिम्मेदारियां तय हैं। 2014 के बाद से यानी नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद विजयादशमी पर संघ प्रमुख के भाषण का प्रसारण प्रसार भारती के तहत आने वाले दूरदर्शन पर होता है, यानी सरकार संघ को कितना महत्व देती है, यह भी जाहिर है। संघ प्रमुख मोहन भागवत को जेड प्लस सुरक्षा मिली है, यानी आम आदमी के दिए गए टैक्स के पैसे से सरकार भागवत को सर्वोच्च श्रेणी की सुरक्षा उपलब्ध करा रही है। जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ खुद को सांस्कृतिक संगठन कहता है। देश में कई कला अकादमियां हैं, इंटैक, स्पीकमैके, इप्टा, प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ जैसे संगठन हैं, जिनका उद्देश्य भारत की कला, संस्कृति, संगीत, साहित्य आदि को संरक्षित और संवर्द्धित करना है, लेकिन इनके प्रमुखों के लिए सरकारी सुरक्षा कभी मुहैया नहीं कराई गई, तो फिर मोहन भागवत को ऐसी सुरक्षा क्यों मिली हुई है, ऐसे सवाल उठते ही हैं। लिहाजा प्रियांक खरगे ने भी कर्नाटक के गृहमंत्री होने के नाते अपने पद के दायरे में रहकर सवाल किए हैं। जिस पर अनावश्यक विवाद खड़ा करने की जगह एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते मोहन भागवत को सीधे जवाब देने चाहिए। मगर वे इसमें हिंदू धर्म को बीच में ले आए हैं। प्रियांक खरगे ने संघ से केवल आठ बिंदुओं पर जवाब मांगा है।

1. राष्ट्रीय स्वयं संघ की कानूनी स्थिति और संगठनात्मक संरचना।
2. इसके पदाधिकारियों और अधिकृत प्रतिनिधियों का विवरण।
3. दान, योगदान और आय के स्रोत।
4. खर्च और संपत्ति का विवरण।
5. क्या कानून के अनुसार लागू करों का भुगतान किया जा रहा है।
6. वह कानूनी आधार जिस पर औपचारिक पंजीकरण के बिना संगठन की गतिविधियां संचालित की जाती हैं।
7. वह संवैधानिक और वैधानिक ढांचा जिसके तहत यह सार्वजनिक जवाबदेही के बिना इतने बड़े पैमाने पर काम करने का अधिकार होने का दावा करता है।
8. सार्वजनिक कार्यक्रमों, रूट मार्च, जनसभाओं और अन्य संगठित गतिविधियों के लिए अनुमतियों, प्राधिकरणों और अनुपालन तंत्रों का विवरण।

प्रियांक खरगे के पास इस सवालों को पूछने का कारण भी उपलब्ध है। उन्होंने मोहन भागवत को पत्र में लिखा है कि संघ की सबसे बड़ी और अहम फैसला लेने वाली संस्था श्अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभाश की 2025–26 की कर्नाटक रिपोर्ट के अनुसार राज्य में संघ की 4,127 रोजाना शाखाएं, 1,389 साप्ताहिक मिलन, 60 मासिक मंडलियां और 2,194 समाजोत्सव (जिनमें 19.61 लाख लोग शामिल हुए) हैं। इतना ही नहीं 2.21 लाख वर्दीधारी प्रतिभागियों के साथ 562 रूट मार्च भी आयोजित किए गए। इतने बड़े पैमाने और प्रभाव के साथ संघ को अपनी कानूनी स्थिति, रजिस्ट्रेशन, पदाधिकारियों, फंडिंग, खर्च, टैक्स और सार्वजनिक गतिविधियों के लिए जरूरी मंजूरियों के बारे में साफ–साफ बताना चाहिए। गृहमंत्री होने के नाते उन्हें यह राज्य की सुरक्षा के मद्देनजर ऐसे सवाल करने ही चाहिए, क्योंकि लाखों लोग अगर संघ के कार्यक्रमों में शामिल हो रहे हैं, तो उसके लिए सार्वजनिक स्थलों का ही इस्तेमाल हो रहा है और यह सीधे कानून–व्यवस्था से जुड़ा मामला है। इन सवालों में न कहीं आपत्तिजनक बात कही गई है, न कोई ऐसा राज पूछा गया है, जिससे कोई कमजोर नस दबी हो, फिर भी मोहन भागवत को इसमें राजनीति नजर आ रही है। मोहन भागवत ने संघ के पंजीकरण की मांग को खारिज करते हुए कहा कि संगठन के पास न तो कुछ छिपाने के लिए है और न ही वह जनता की नजरों से बचकर काम करता है। उन्होंने साफ कहा है कि श्बहुत–सी अपंजीकृत चीजें संचालित हो रही हैं और हम कोई बात छिपाते नहीं हैं। हम खुलेआम काम करते हैं। हम लोगों को बुलाते हैं और उन्हें बताते हैं कि हम क्या करते हैं। भागवत ने कहा, यह राजनीति है। इस तरह के हथकंडे अपनाए जा रहे हैंश हमें इसकी आदत हो गई है। संघ के अस्तित्व में आने के 10–15 साल बाद ही हमें इन सब चीजों का सामना करना पड़ा था। अगर ऐसा न हो, तो हमें लगता है कि कुछ गड़बड़ है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश शासन के दौरान स्थापित यह संगठन सार्वजनिक बहस और आम सहमति की प्रक्रिया से उभरकर सामने आया। भागवत ने कहा, हिंदू धर्म पंजीकृत नहीं है। कई चीजें पंजीकृत नहीं होतीं। जो लोग सरकार से निधि चाहते हैं, उन्हें पंजीकरण कराने की जरूरत होती है। भागवत ने ये भी कहा कि, सरकार ने हम पर दो बार प्रतिबंध लगाया। एक प्रतिबंधा अदालत के आदेश के तहत और दूसरा सत्याग्रह के बाद हटाया गया। इसका मतलब है कि सरकार को आरएसएस के अस्तित्व के बारे में पता था।श उन्होंने कहा कि संगठन ने 1950 में सरकार को अपना लिखित संविधान सौंपा था और किसी भी अधिकारी ने कभी इस बात पर जोर नहीं दिया कि मान्यता मिलने से पहले उसके लिए पंजीकरण कराना जरूरी है। भागवत ने कहा, पिछले 100 वर्षों में किसी ने हमसे नहीं कहा कि हमें पंजीकरण कराना होगा। आरएसएस प्रमुख ने आरोप लगाया कि ऐसी मांगों का मकसद आरएसएस के काम में बाधा डालना और लोगों के मन में संदेह पैदा करना है। प्रियांक खरगे के सवालों का सीधा जवाब न देकर हिंदू धर्म के नाम पर उलझाने की कोशिश में भागवत ने बड़ी गलती कर दी है। अगर संघ के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, तो फिर पंजीकरण कराएं और सारे कागजात पेश कर दें। हिंदू धर्म के पंजीकरण की बात को खरगे ने की नहीं है, उन्होंने संघ के पंजीकरण के बारे में पूछा है। अगर हिंदू धर्म का नाम लेकर कानूनी औपचारिकताओं से बचने का खेल शुरु हो जाए, तो फिर देश में ऐसी अराजकता कायम होगी, जिसे संभालना मुश्किल होगा। इस समय राम मंदिर में ही गबन और चोरी का जो खेल हुआ है, वह क्या धर्म के नाम पर कम धोखा देना था, जो अब भागवत भी हिंदू धर्म का नाम लेकर पंजीकरण से मना कर रहे हैं। अगर पंजीकरण हो जाएगा तो क्या संघ का अस्तित्व खतरे में आएगा या उसके पैसों का हिसाब–किताब सामने आ जाएगा, आखिर किस बात की पर्दादारी की जा रही है। मोहन भागवत का यह तर्क भी अजीब है कि हम खुले में शाखाएं लगाते हैं। इस तरह के कुतर्क माने जाएं तो फिर देश का हाल चौपट हो जाएगा। रेहड़ी–पटरी वाले कहेंगे कि हम भी खुले में अपना कारोबार करते हैं तो नियमों को नहीं मानेंगे, गैर सरकारी संगठन भी भवनों की जगह खुले स्थानों पर अपनी गतिविधियां संचालित करेंगे और कहेंगे कि अब हमें सरकार को हिसाब–किताब देने की जरूरत नहीं। खुले में पांच मिनट की नमाज पढ़ने वाले मुस्लिमों के लिए तो भाजपा सरकारों में सौ तरह के नियम बना दिए जाते हैं, उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया जाता है। लेकिन खुले में लाठी चलाना हो तो सरकार को कोई दिक्कत नहीं। क्या संघ सरकार से भी ऊपर है। और मोहन भागवत जो इल्जाम लगा रहे हैं कि संघ को लेकर लोगों के मन में संदेह पैदा करने की कोशिश है, तो साहब आप सारे जवाब देकर इस कोशिश पर पानी फेर दीजिए, इसमें आप झिझक क्यों रहे हैं। दरअसल मोहन भागवत संदेह पैदा करने वाली रणनीति को अच्छे से जानते–समझते हैं। आखिर मुसलमानों के लिए यही काम तो खूब किया जाता है। बार–बार उनसे देशभक्ति का सबूत मांगना, वंदे मातरम या जय श्रीराम न बोलने पर उन्हें पाकिस्तान जाने की सलाह देना ये काम भाजपा के शासन में खूब हो रहे हैं। भाजपा सरकारों में शिक्षा देने के लिए बने मदरसों को भी शक के दायरे में लाया गया है। तालीम का धोखा, मदरसों का लेखा–जोखा जैसे शीर्षकों से दूरदर्शन पर कार्यक्रम हो चुके हैं। भाजपा राष्ट्रीय सुरक्षा, अवैध फंडिंग, शिक्षा के आधुनिकीकरण और प्रशासनिक पारदर्शिता के नाम पर मदरसों से सवाल करती आई है।

अमेरिका–ईरान समझौताः शांति या अस्थायी विराम

असद मिर्जा

अमेरिका और ईरान के बीच हुआ प्रारूप शांति समझौता पश्चिम एशिया में व्यापक युद्ध के तत्काल खतरे को कम करने में सफल रहा है। कई महीनों तक चले सैन्य टकराव ने वैश्विक ऊर्जा बाजारों को प्रभावित किया, होर्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा को खतरे में डाला और पूरे क्षेत्र में बड़े संघर्ष की आशंकाएं पैदा कर दी थीं। ऐसे माहौल में वाशिंगटन और तेहरान का बातचीत का रास्ता चुनना महत्वपूर्ण माना जा रहा है। लेकिन इतिहास बताता है कि शांति समझौते पर हस्ताक्षर करना और उसे लंबे समय तक कायम रखना दो अलग बातें हैं। यह समझौता फिलहाल किसी व्यापक शांति संधि से अधिक एक राजनीतिक समझ है, जिसका उद्देश्य संघर्ष रोकना और आगे की बातचीत के लिए रास्ता बनाना है। इसकी सफलता केवल अमेरिका और ईरान की प्रतिबद्धताओं पर नहीं, बल्कि इजराइल के रुख, घरेलू राजनीतिक विरोध और ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े विवादों पर भी निर्भर करेगी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसे अपनी कूटनीतिक और सैन्य रणनीति की सफलता बताया है। उनका कहना है कि होर्मुज जलडमरूमध्य के फिर से खुलने से वैश्विक ऊर्जा बाजारों में भरोसा लौटेगा। तेल आपूर्ति और समुद्री परिवहन को लेकर चिंताएं पहले ही कम हुई हैं। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस समझौते का स्वागत करते हुए पश्चिम एशिया में शांति और स्थिरता लौटने की उम्मीद जताई है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा और वहां रहने वाले भारतीय समुदाय के लिए यह क्षेत्र विशेष महत्व रखता है। अमेरिकी नीति में भी एक बदलाव दिखाई देता है। पहले वाशिंगटन की मांग थी कि ईरान अपनी परमाणु क्षमताओं को पूरी तरह समाप्त करे, तभी प्रतिबंधों में राहत संभव होगी। मौजूदा समझौते में पहले सैन्य टकराव रोकने और बाद में परमाणु सत्यापन, प्रतिबंधों तथा क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दों पर बातचीत जारी रखने का रास्ता अपनाया गया है। हालिया संघर्ष ने यह भी दिखाया कि लंबे क्षेत्रीय युद्ध की आर्थिक और राजनीतिक कीमत काफी अधिक होती है। अमेरिका में इस समझौते को लेकर पूरी सहमति नहीं है। कुछ रिपब्लिकन नेताओं का मानना है कि प्रतिबंधों में राहत मिलने से ईरान अपनी सैन्य क्षमताओं को फिर मजबूत कर सकता है। वहीं ईरान भी इसे अपनी जीत के रूप में पेश कर रहा है। तेहरान का कहना है कि उसने अमेरिकी और इजराइली दबाव का सामना किया, लेकिन अपने मूल रणनीतिक उद्देश्यों से पीछे नहीं हटा। समझौते में ईरान के परमाणु ढांचे को तत्काल समाप्त करने की शर्त नहीं रखी गई है और यूरेनियम संवर्धन से जुड़े मुद्दे आगे की बातचीत के लिए छोड़े गए हैं। ईरान के भीतर भी अमेरिका को लेकर गहरा अविश्वास मौजूद है। 2015 के परमाणु समझौते से अमेरिका के बाहर निकलने को वहां आज भी एक बड़ी वजह माना जाता है। यही कारण है कि तेहरान भविष्य की किसी भी व्यवस्था में अधिक ठोस गारंटी चाहता है। अमेरिका और ईरान के संबंधों पर इतिहास की गहरी छाप है। 1979 की ईरानी क्रांति के बाद दोनों देशों के बीच संबंध अविश्वास, प्रतिबंधों, परोक्ष संघर्षों और सैन्य टकरावों से प्रभावित रहे हैं। 2015 का संयुक्त व्यापक कार्ययोजना समझौता (जेसीपीओ) कूटनीति की सफलता माना गया था, लेकिन 2018 में अमेरिका के उससे बाहर निकलने के बाद ईरान ने यूरेनियम संवर्धन बढ़ाया और वाशिंगटन ने प्रतिबंधों को और सख्त किया। यही प्रक्रिया हालिया टकराव तक पहुंची। मौजूदा समझौते की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि परमाणु विवाद का मूल प्रश्न अभी भी अनसुलझा है। उच्च स्तर पर संवर्धित यूरेनियम का भंडार प्रमुख विवादों में शामिल है। अमेरिका संवर्धन क्षमता में कमी और कड़े अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण की मांग करता है, जबकि ईरान शांतिपूर्ण परमाणु संवर्धन को अपना संप्रभु अधिकार मानता है। अमेरिका के लिए ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना अनिवार्य है, जबकि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को राष्ट्रीय गौरव और रणनीतिक स्वतंत्रता से जोड़कर देखता है। क्षेत्रीय परिस्थितियां भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं। इजराइल साफ कर चुका है कि उसकी सुरक्षा चिंताएं केवल अमेरिका–ईरान समझौते तक सीमित नहीं हैं। हिजबुल्लाह, ईरान का क्षेत्रीय प्रभाव और उसकी मिसाइल क्षमताएं अब भी उसके लिए प्रमुख मुद्दे हैं। लेबनान में इजराइली सैन्य गतिविधियां इस समझौते के दायरे से बाहर हैं। दूसरी ओर हिजबुल्लाह और अन्य सहयोगी समूहों के साथ ईरान के संबंध भी मौजूदा व्यवस्था में शामिल नहीं हैं। इसलिए अमेरिका और ईरान के बीच संवाद जारी रहने के बावजूद क्षेत्रीय तनाव पूरी तरह समाप्त नहीं होंगे। इसके बावजूद कुछ ऐसे कारण हैं जो इस समझौते को पिछले प्रयासों की तुलना में अधिक टिकाऊ बना सकते हैं। दोनों देशों ने प्रत्यक्ष संघर्ष की भारी कीमत चुकाई है। आर्थिक नुकसान, सैन्य खर्च और अंतरराष्ट्रीय दबाव ने संयम बरतने के लिए नई परिस्थितियां पैदा की हैं। साथ ही वार्ताकारों ने पहले संघर्ष रोकने और बाद में कठिन मुद्दों पर बातचीत करने की रणनीति अपनाई है। अंततः इस समझौते को संकट का अंत नहीं, बल्कि एक लंबी और जटिल कूटनीतिक प्रक्रिया की शुरुआत के रूप में देखना चाहिए। इसकी सफलता राजनीतिक इच्छाशक्ति, भरोसेमंद सत्यापन व्यवस्था, परस्पर प्रतिबद्धताओं के पालन और क्षेत्रीय तनावों के प्रबंधन पर निर्भर करेगी। इसने युद्ध के तत्काल खतरे को कम किया है और क्षेत्रीय स्थिरता की उम्मीद जगाई है, लेकिन स्थायी शांति का रास्ता अभी भी लंबा है। दोनों देशों को दशकों पुराने अविश्वास से आगे बढ़कर यह साबित करना होगा कि बातचीत और समझौता निरंतर टकराव की तुलना में उनके राष्ट्रीय हितों के लिए अधिक लाभकारी हैं। तभी यह युद्धविराम स्थायी शांति में बदल सकेगा।

लोककथाओं में 'प्रकृति संवाद'

अंजलि श्रीवास्तव,
प्रयागराज

'प्रकृति रक्षति रक्षिता' अर्थात् जो प्रकृति की रक्षा करता है, प्रकृति उसकी रक्षा करती है। भारतीय जीवन– दृष्टि की यह भावना केवल शास्त्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि लोकजीवन और लोककथाओं में भी गहराई से अभिव्यक्त होती है।

'लोकजीवन में प्रकृति केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि संस्कृति संवेदना और जीवन– मूल्यों का अभिन्न अंग रही है।'

यही कारण है कि लोककथाओं में नदी, वृक्ष, पशु–पक्षी ,पर्वत और ऋतुएं जीवंत पात्रों के रूप में उपस्थित होती है।

वे केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं बनते, बल्कि मनुष्य के साथ संवाद करते हुए लोकज्ञान और जीवन –दर्शन को अभिव्यक्त करते हैं।

लोककथाएं समाज की सामूहिक स्मृति होती है। इनमें लोकजीवन के अनुभव, विश्वास, संघर्ष और जीवन –दृष्टि सुरक्षित रहती है। भारतीय लोक कथाओं में प्रकृति को सदैव आत्मीय दृष्टि से देखा गया है। यहां नदी केवल जलधारा नहीं, वृक्ष केवल वनस्पति नहीं, पशु –पक्षी केवल जीव नहीं है। वह मनुष्य के सुख –दुख के सहभागी हैं। लोकमानस प्रकृति को अपने परिवार का हिस्सा मानता है। यही आत्मीयता लोक कथाओं में प्रकृति संवाद का आधार बनती है।

भारतीय लोककथाओं में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं। जहां कौवा, कोयल, गाय, हंस, नाग, पीपल और नदी मनुष्य के जीवन से जुड़े दिखाई देते हैं। कहीं पक्षी संकट का संकेत देते हैं, कहीं पशु मनुष्य की सहायता करते हैं और कहीं वृक्ष संरक्षण तथा धैर्य का संदेश देते हैं। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं यह बताना होता है कि मनुष्य और प्रकृति का जीवन परस्पर जुड़ा है। और प्रकृति मनुष्य के व्यवहार को समझती है। और उसके अनुरूप प्रतिक्रिया भी देती है।

भारतीय कथा परंपरा में प्रकृति की यह उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। पंचतंत्र के रचयिता विष्णु शर्मा ने पशु– पक्षियों के माध्यम से जीवनोपयोगी ज्ञान और व्यावहारिक बुद्धि को प्रस्तुत किया है। इस कथाओं में पशु –पक्षी केवल पात्र नहीं,वह मनुष्य को विवेक, मित्रता सावधानी और नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय कथा परंपरा में प्रकृति केवल दृश्य नहीं, ज्ञान और अनुभव की सहयात्री है।

लोककथाओं में वृक्षों का विशेष महत्व दिखाई देता है पीपल बरगद नीम और तुलसी से जुड़े अनेक लोक विश्वास आज भी प्रचलित है। लोककथाओं में वृक्षों को जीवनदाता और संरक्षण के रूप में देखा गया है। वृक्षों को काटने पर संकट आने तथा उनकी रक्षा करने पर सुख और समृद्ध पाने का वर्णन मिलता है। इन कथाओं के माध्यम से समाज में प्रकृति संरक्षण की भावना विकसित की जाती रही है।

लोकजीवन का यह अनुभव आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि वृक्ष केवल पर्यावरण नहीं, बल्कि जीवन के संतुलन का आधार है।

नदिया भी लोक कथाओं में विशेष स्थान रखती हैं। भारतीय संस्कृत में नदियों को मातृ स्वरूपा माना गया है। गंगा जमुना नर्मदा और गोदावरी जैसी नदिया केवल जल का स्रोत नहीं है, लोक आस्था और सांस्कृतिक चेतना की वाहक है। अनेक लोक कथाओं में नदिया जीवन पवित्रता और संरक्षण का प्रतीक बनकर सामने आते हैं। नदी और मनुष्य का संबंध उपयोग का नहीं, आत्मीयता का संबंध है।

प्रयागराज त्रिवेणी संगम से जुड़े लोकजीवन को पीढ़ी– दर–पीढ़ी देखते हुए, यह अनुभव सहज रूप से किया जा सकता है कि गंगा तट पर आने वाले लोक अपने सुख –दुख, आशाएं और प्रार्थनाएं गंगा से साझा करते हुए दिखाई देते हैं ।गंगा को चुनरी चढ़ाते हैं दीप प्रवाहित करने तथा विभिन्न अनुष्ठानों में सहभागी बनने की यह परंपरा संकेत देती है कि गंगा आज़ भी लोकआस्था और संस्कृति चेतना का, जीवंत का आधार है।

लोककथाएं केवल बाहरी जगत का वर्णन नहीं करती, बल्कि लोक बुद्धि को भी अभिव्यक्त करती है। किसान ऋतुओं के संकेतों को समझता है। पक्षियों की आवाज से मौसम का अनुमान लगता है और धरती के स्वभाव से जीवन का अनुभव प्राप्त करता है। यह लोक ज्ञान, लोककथाओं लोक परंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ता रहा लोककथाएं इस अनुभव को संरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं।

प्रकृति संवाद का एक महत्वपूर्ण पक्ष पर्यावरण चेतना भी है। अनेक लोककथाओं में जल स्रोतों को प्रदूषित करने,वृक्षों को नष्ट करने और साथ में प्रकृति संतुलन को बिगाड़ने का दुष्परिणामों का वर्णन मिलता है लोककथाओं के माध्यम से समाज संदेश दिया जाता है प्रकृति का संरक्षण केवल आवश्यक नहीं, नैतिक जिम्मेदारी की है।

आज के समय में पर्यावरण संकट जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से प्रकृति समस्या गंभीर होती जा रही है।ऐसे समय में लोककथाओं की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। वे हमें स्मरण कराते हैं कि प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं बल्कि सह– अस्तित्व का संबंध ज़रूरी है।लोकजीवन की यह चेतना आज भी मानव समाज को संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

आज मौसम संबंधी चेतावनी मोबाइल तक पहुंच जाती है और विज्ञान हमें अनेक प्राकृतिक परिवर्तन की जानकारी पहले ही दे देता है किंतु प्रकृति के संकेत की समझने की गणना पहले से ही है और आज भी है।

पहले यह कार्य लोक ज्ञान और अनुभव के आधार पर होता था, आज विज्ञान और तकनीक उसकी सहायता कर रहे हैं। माध्यम बदल गए पर प्रकृति और मनुष्य के बीच संवाद की आवश्यकता आज भी बनी हुई है। लोककथाएं इसी संवाद की सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखती है।

इस प्रकार लोक कथाओं में प्रकृति संवाद केवल साहित्यिक कल्पना नहीं है, बल्कि जीवन– दर्शन है। यह संवाद मनुष्य को संवेदनशील बनाता है। प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करता है, सह– अस्तित्व का मार्ग दिखाता है। लोककथा हमें यह स्मरण कराती हैं कि मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे के पूरक है। जब तक

लोककथाएं जीवित रहेंगे, तब तक मनुष्य और प्रकृति के बीच यह आत्मीय संवाद भी जीवित रहेगा।

`सुपरमैन' फेम एक्टर हेनरी कैविल के साथ नजर आईं सारा अली खान,

> बात करें सारा की एक्सेसरीज की तो वो भी उतने ही स्टाइलिश और आकर्षक थे। अभिनेत्री ने कढ़ाई वाला पाउच बैग, क्रिस्टल बकल से सजे पॉइंटेड-पंप्स और ब्रोच के साथ अपने लुक को खास बनाया।

गुरुवार की शाम हॉलीवुड और बॉलीवुड का शानदार संगम देखने को मिला। जब 'सुपरमैन' फेम एक्टर हेनरी कैविल और बॉलीवुड एक्ट्रेस सारा अली खान की मुलाकात की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हुईं। दोनों कलाकार एक लग्जरी वॉच ब्रांड के इवेंट में शामिल हुए। इवेंट में पटौदी खानदान की युवा राजकुमारी सारा अली खान अपने शाही अंदाज में नजर आईं। सारा ने इवेंट से कई तस्वीरें अपने इंस्टाग्राम पर शेयर कीं। इवेंट में सारा हॉलीवुड स्टार हेनरी कैविल के साथ नजर आईं। तस्वीरें पोस्ट करते हुए सारा ने कैप्शन में लिखा, 'एक शाही शाम..' सारा ने इस खास इवेंट के लिए मोनोक्रोमैटिक आइवरी आउटफिट चुना। इसके साथ उन्होंने अपनी खूबसूरती और शालीनता का बेहतरीन मेल पेश किया। उनके लुक में एक तरफ जहां विंटेज चार्म था वहीं दूसरी तरफ आधुनिक भव्यता भी नजर आई। उन्होंने रिच टेक्सचर वाले ट्वीड–स्टाइल फैब्रिक से बनी स्ट्रक्चर्ड मिडी–लेंथ शीथ ड्रेस पहनी थी। जिसमें स्कूप नेकलाइन उनके लुक को और आकर्षक बना रही थी। इस अंदाज को और निखारने के लिए उन्होंने अपने कंधों पर मैचिंग ब्लेजर कैरी किया, जिसने उनके पूरे लुक में एक रॉयल टच जोड़ दिया। बात करें सारा की एक्सेसरीज की तो वो भी उतने ही स्टाइलिश और आकर्षक थे। अभिनेत्री ने कढ़ाई वाला पाउच बैग, क्रिस्टल बकल से सजे पॉइंटेड–पंप्स और ब्रोच के साथ अपने लुक को खास बनाया। बता दें, सैफ अली खान और अमृता सिंह की बेटी सारा अली खान मशहूर पटौदी खानदान से ताल्लुक रखती हैं। इससे पहले भी सारा साल 2019 में फोर्ब्स इंडिया सेलिब्रिटी 100 की सूची में जगह बना चुकी हैं। करियर की बात करें तो हाल ही में वो फिल्म 'पति पत्नी और वो दो' में नजर आईं, जिसमें उनके साथ आयुष्मान खुराना, रकुल प्रीत सिंह और वामिका गब्बी भी अहम भूमिकाओं में दिखाई दिए थे।

`वही करना चाहती हूं जो पहले कभी न किया हो', महिला केंद्रित फिल्मों पर माधुरी दीक्षित ने रखी राय

करियर के शुरुआती दिनों को याद करते हुए माधुरी ने बताया, 'जब मैंने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी, तब मैं उस दौर की बनी–बनाई हीरोइनों जैसी नहीं दिखती थी। इस वजह से कई बातें होती थीं। लोग कहते थे ये बहुत पतली है, ये कैसे चलेगी? नहीं हो पाएगा। लेकिन उस वक्त मेरी मां मेरे साथ खड़ी रही। वो हमेशा एक बात कहती थीं कि लोग आज जिस चीज के लिए तुम्हारी आलोचना कर रहे हैं, कल वही तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत बनेगी।' जब माधुरी से पूछा गया कि क्या कभी उन्होंने खुद असुरक्षा महसूस की? तो अभिनेत्री ने कहा, 'आज मैं खुद के साथ पूरी तरह सहज हूं। लेकिन असुरक्षाएं तब थीं जब मैंने नया–नया काम शुरू किया था। उस समय कुछ लोगों ने मेरे मन में असुरक्षाएं डालने की कोशिश की थी। लेकिन मेरी मां चट्टान की तरह मेरे साथ खड़ी थीं। वो हर बार मेरी हर असुरक्षा को वहीं खत्म कर देती थीं।' हिंदी सिनेमा में महिलाओं को लेकर बदलती सोच पर बात करते हुए माधुरी ने एक ऐसा सवाल उठाया, जिस पर इंडस्ट्री में बहस हो सकती है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है श्मां बहनश जैसी फिल्में इस बात का संकेत हैं कि अब चीजें बदल रही हैं। आज हमारे पास ऐसे लेखक और निर्देशक हैं जो महिलाओं को कहानी के केंद्र में रखकर काम कर रहे हैं। लेकिन एक बात मुझे आज तक समझ नहीं आती। जब किसी हीरो की फिल्म आती है तो कोई उसे अलग नाम नहीं देता, लेकिन जैसे ही हीरोइन कहानी के केंद्र में होती है, फिल्म को तुरंत फीमेल सेंट्रिक कह दिया जाता है। आखिर ऐसा क्यों? फिल्म 'मां बहन' के बाद कहा जा रहा है कि क्या माधुरी अपनी एक नई पहचान गढ़ रही हैं? इसके जवाब में एक्ट्रेस ने कहा, 'ऐसा कुछ नहीं है। जब लोग मुझे धक धक गर्ल कहते थे, तब भी मैंने श्मृत्युदंड', 'पुकार' और 'लज्जा' जैसी फिल्में की थीं। मैं हमेशा वही करना चाहती हूं जो मैंने पहले कभी न किया हो। यही चीज मुझे आगे बढ़ाती है। मैं हमेशा खुद को बदलते रहना चाहती हूं। अगर लोगों को अब ऐसा लग रहा है तो मुझे खुशी है।' फिल्म के सामाजिक पहलू पर बात करते हुए माधुरी ने बचपन की एक याद साझा की। उन्होंने कहा, 'हम बहुत जल्दी लोगों को देखकर राय बना लेते हैं। मुझे याद है हमारे अपार्टमेंट में नीचे एक महिला रहती थीं। वो अकेली रहती थीं, साड़ी पहनती थीं, चश्मा लगाती थीं, होली खेलना पसंद नहीं था, दिवाली पर बाहर नहीं आती थीं। बहुत निजी जिंदगी जीती थीं और घर की खिड़कियां भी बंद रहती थीं। फिर लोग कहते थे उनसे बात मत करना, उनके पास मत जाना। हम बच्चे खिड़की से झांककर सोचते थे कि आखिर ऐसा क्या रहस्य है। मुझे लगता है जिस चीज को हम समझ नहीं पाते, उसके बारे में हम अपनी तरफ से कहानी बनाना शुरू कर देते हैं। जब मैंने यह स्क्रिप्ट सुनी तो मुझे लगा यह फिल्म तो मुझे करनी ही है।' बदलते सिनेमा पर माधुरी ने कहा, 'मुझे लगता है दोनों दौर आसान नहीं हैं। बड़े पर्दे की फिल्म बनाते वक्त सबसे बड़ा दबाव यही होता है कि वह हर तरह के दर्शकों को पसंद आए। अलग–अलग सोच, अलग–अलग तबके, अलग–अलग माहौल..., सबको जोड़ना पड़ता है, तभी लोग थिएटर तक आते हैं। लेकिन अब जो बदलाव आया है, उसने फिल्म बनाने वालों को खुलकर काम करने का मौका दिया है। अब कहानियां किसी तय ढांचे में बंधकर नहीं बन रहीं। भारत जैसे देश में कहानियां ही कहानियां हैं। मां बहन को दुनिया भर में लोग देख रहे हैं और अलग–अलग देशों की महिलाओं ने इसके किरदारों से खुद को जोड़ा है। मुझे लगता है अब वही फिल्में ज्यादा जरूरी हैं जो सच बोलती हैं और लोगों को अपने जैसा महसूस कराती हैं।'

वैष्णो देवी के दरबार में पहुंचे अक्षय कुमार, 'वेलकम टू द जंगल' की रिलीज से पहले लिया माता का आशीर्वाद

अक्षय कुमार इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' को लेकर चर्चाओं में हैं। इस बीच हाल ही में अक्षय फिल्म की रिलीज से पहले माता वैष्णो देवी के दरबार में पहुंचे। अक्षय ने त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित इस पवित्र मंदिर में माथा टेका और आशीर्वाद लिया। मंदिर परिसर में अभिनेता को देखते ही वहां मौजूद फैंस ने उन्हें घेर लिया। इस दौरान अक्षय कुमार पारंपरिक सफेद कुर्ता पहने नजर आए। सोशल मीडिया पर भी अक्षय के कई वीडियो सामने आए हैं, जिसमें फैंस उनके साथ सेल्फी लेने की कोशिश करते नजर आ रहे हैं। मंदिर में पूजा–अर्चना के लिए जाने से पहले कुमार यात्रा के बेस कैंप कटरा पहुंचे। अधिकारियों ने बताया कि मंदिर में पूजा–अर्चना के लिए जाने से पहले अक्षय यात्रा के बेस कैंप कटरा पहुंचे। एक्टर के आने से श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों में काफी उत्साह देखा गया। कई लोग फिल्म स्टार की एक झलक पाने की उम्मीद में रास्ते में और मंदिर परिसर में जमा हो गए। अधिकारियों ने बताया कि कुमार ने पवित्र गुफा मंदिर में दर्शन किए और लौटने से पहले कुछ समय पूजा–अर्चना में बिताया। अहमद खान द्वारा निर्देशित 'वेलकम टू द जंगल' में अक्षय कुमार समेत 34 कलाकार प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। इनमें अक्षय कुमार के साथ सुनील शेट्टी, दिशा पाटनी, जैकलीन फर्नांडिस, रवीना टंडन, लारा दत्ता, अरशद वारसी, तुषार कपूर, श्रेयस तलपड़े, आफताब शिवदासानी और जैकी श्रॉफ समेत कई अन्य नाम शामिल हैं। यह फिल्म 26 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

यह कॉकटेल नहीं...फीका मॉकटेल है, फिल्म में सब कुछ है, फिर असर क्यों नहीं?

एक बात पहले ही साफ कर देते हैं। कॉकटेल 2, 2012 में आई फिल्म कॉकटेल का रीमेक नहीं है। मेकर्स इसे स्पिरिचुअल सीक्वल कह रहे हैं। मतलब कहानी नई है, लेकिन दोस्ती, प्यार, दिल टूटना और रिश्तों की उलझन वाला वही पुराना फॉर्मूला फिर से उठाया गया है। अब यहां एक मजेदार चीज होती है। आजकल फिल्म इंडस्ट्री में नया तरीका चल पड़ा है। पुरानी हिट फिल्म का नाम इस्तेमाल करो, उसी तरह का माहौल बनाओ और रिलीज से पहले बोल दो – तुलना मत कीजिए।श लेकिन भाई, तुलना होगी ही। नाम भी वही, रिश्तों का झोल भी वही, बेचने की कोशिश भी वही..., तो ऑडियंस को पहली फिल्म याद आएगी ही। साल 2012 में होमी अदजानिया श्कॉकटेलश लेकर आए थे। सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डायना पेंटी – तीनों के रिश्ते उलझे हुए थे, गलतियां थीं, दिल टूटते थे और कई फैसले ऐसे थे, जिनसे आप सहमत भी नहीं होते थे। लेकिन फर्क यह था कि सब कुछ सच्चा लगता था। उन किरदारों में कमियां थीं, लेकिन कम से कम नकली नहीं लगते थे। अब 14 साल बाद होमी फिर लौटे हैं। इस बार शाहिद कपूर, कृति सेनन और रश्मिका मंदाना के साथ। इरादा शायद आज की पीढ़ी के रिश्तों पर कुछ नया कहने का था। लेकिन फिल्म देखकर ऐसा लगता है जैसे पहली कॉकटेल से सारी भावनाएं निकाल ली गईं और बदले में सिर्फ विदेशी लोकेशन, महंगे कपड़े और चमक–दमक डाल दी गई। मतलब बोतल वही रखी गई है, लेकिन अंदर का स्वाद पूरी तरह बदल चुका है। सबसे बड़ी दिक्कत यही है। कहानी कुणाल (शाहिद कपूर), दिया (रश्मिका मंदाना) और एली (कृति सेनन) के आसपास घूमती है। कुणाल और दिया रिश्ते में हैं, लेकिन कुछ समय बाद वही दिक्कत शुरू हो जाती है जो आजकल हर दूसरी फिल्म में दिखाई जाती है – सब ठीक है, बस अब रिश्ते में पहले वाला रोमांच नहीं बचा। फिर एली की एंट्री होती है। दिया, कुणाल को परखने के लिए एली को आगे करती है। यहां तक सब ठीक लगता है। लेकिन उसके बाद सिर्फ दो दिन साथ घूमने के बाद एली को कुणाल से प्यार हो जाता है और वो भी सच्चा प्यार। अब प्यार हो जाना गलत नहीं है, लेकिन फिल्म इसे जिस रफ्तार से दिखाती है, वहां देखकर लगता है कि इमोशंस को समय नहीं मिला, पटकथा को जल्दी थी। इसके बाद झगड़े होते हैं, रिश्ते टूटते हैं, लोग रोते हैं, इमोशनल सीन्स आते हैं, लेकिन अजीब बात यह है कि पर्दे पर इतना कुछ चल रहा होता है और आप कुछ महसूस ही नहीं करते। मतलब फिल्म आपको बार–बार कह रही होती है – श्यहां दुखी हो जाओ यहां भावुक हो जाओ यहां हंसो.. लेकिन दिल है कि मानता ही नहीं। शाहिद कपूर वैसे अच्छे अभिनेता हैं, इसमें कोई शक नहीं। और शायद इसलिए यहां उन्हें देखकर निराशा ज्यादा होती है। पूरी फिल्म में कई जगह ऐसा लगता है जैसे वह किरदार निभाने नहीं, हर सीन में यह साबित करने आए हैं कि – देखो, हम कितना अभिनय कर सकते हैं। समस्या यह है कि कई जगह यह अभिनय नहीं, सीधी ओवरएक्टिंग लगने लगती है। हल्के–फुल्के सीन्स में वह हंसाने की कोशिश बहुत करते हैं, लेकिन हंसी आने के बजाय कई बार अजीब सा सन्नाटा महसूस होता है। जहां भावुक होना चाहिए, वहां भी कई जगह आंखों में आंसू कम और चेहरे पर जोर ज्यादा दिखाई देता है। रश्मिका मंदाना इस फिल्म की सबसे कमजोर कड़ी हैं। सबसे पहली दिक्कत है उनका लहजा। हिंदी बोलते वक्त कई जगह उनका तरीका इतना अटपटा लगता है कि गंभीर सीन्स भी असर नहीं छोड़ पाते। फिल्म उन्हें मासूम दिखाना चाहती है, लेकिन कई जगह वह मासूम कम और बेवजह उलझी हुई ज्यादा लगती हैं। कृति के सामने उनका किरदार इतना कमजोर लिखा गया है कि कई सीन्स में वह असर छोड़ ही नहीं पातीं। फिल्म साफ तौर पर कृति सेनन को इस पीढ़ी की वेरोनिका बनाना चाहती है। लेकिन यही सबसे बड़ी समस्या है। पहली कॉकटेल में दीपिका पादुकोण का वेरोनिका वाला किरदार टूटा हुआ था, अकेला था, बिखरा हुआ था, लेकिन उसके भीतर मासूमियत थी। आप उसके दर्द को महसूस कर सकते थे। यहां कृति का किरदार आकर्षक है, ग्लैमरस है, कॉन्फिडेंट है, लेकिन इमोशनल रूप से पूरी तरह खाली है। जहां पहली फिल्म की वेरोनिका टूटी हुई, लेकिन सच्ची लगती थी, यहां कृति का किरदार कई जगह जरूरत से ज्यादा चालाक लगता है। ऊपर से ग्लैमर इस कदर ठूंसा गया है कि कई बार लगता है फिल्म रिश्तों पर नहीं, फैशन ब्रांड्स पर बनी है। सपोर्टिंग कास्ट के साथ तो फिल्म ने और भी ज्यादा नाइंसाफी की है। टीकू तलसानिया जैसे अनुभवी अभिनेता को सिर्फ शाहिद कपूर के पिता बनाकर खड़ा कर दिया गया है, जैसे उनकी मौजूदगी सिर्फ फ्रेम भरने के लिए हो। नीलू कोहली जैसी अच्छी अभिनेत्री को देखकर तो यही लगता है कि उन्हें बस शादी वाले माहौल में भीड़ बढ़ाने के लिए रख लिया गया। किरदार ऐसा कि अगर फिल्म से हटा भी दें तो शायद किसी को फर्क न पड़े। और पुलकित सम्राट कैमियो में आते हैं, लेकिन उनका किरदार भी कहानी में कोई खास फर्क पैदा नहीं करता। पहली फिल्म में रिलेशनशिप को सांस लेने की जगह दी गई थी। यहां सब कुछ जरूरत से ज्यादा चमकदार है। फिल्म खुद तय नहीं कर पाती कि इसे प्रेम कहानी बनना है, दिल टूटने की कहानी बनना है या किसी आलीशान लाइफस्टाइल का विज्ञापन। फिल्म का पहला भाग देखकर कई बार लगता है जैसे कहानी नहीं, किसी टूरिज्म कंपनी का विज्ञापन चल रहा हो। स्क्रीनप्लेकी हालत और खराब है। रिश्ते धीरे–धीरे बनते नहीं, अचानक बदल जाते हैं। टकराव अपने आप पैदा नहीं होता, जबरदस्ती पैदा किया जाता है। कई जगह साफ दिखता है कि कहानी अपने हिसाब से नहीं चल रही, लेखक उसे धक्का देकर आगे बढ़ा रहे हैं। पहली कॉकटेल का म्यूजिक आज भी याद किया जाता है। प्रीतम के संगीत से सजा वह एल्बम फिल्म की सबसे बड़ी ताकतों में से एक था। 'तुम ही हो बंधु', 'दारू देसी', 'सेकेंड हैंड जवानी' जैसे गाने आज भी लोग सुनते हैं। इस बार भी संगीत की जिम्मेदारी प्रीतम के ही कंधों पर है। 'जब तलक' में अरिजीत सिंह और आकासा, 'तुझको' में अरिजीत सिंह और सुनिधि चौहान जैसे अच्छे नाम जुड़े हैं। दिक्कत यह नहीं कि गाने खराब हैं। दिक्कत यह है कि असर छोड़ते नहीं हैं। थिएटर में सुनते वक्त सब ठीक लगता है। हां, फिल्म में एक हिस्सा ऐसा आता है जहां लगता है कि लेखक आखिरकार जाग गए। आखिरी 10 मिनट में फिल्म सोशल मीडिया और रिश्तों की आज की सच्चाई पर बात करती है। यह समझाने की कोशिश होती है कि हर रिश्ते में हर समय रोमांच होना जरूरी नहीं है। प्यार का मतलब सिर्फ हर वक्त कुछ नया महसूस करना नहीं होता। ठहराव भी रिश्तों का हिस्सा होता है।

आपका डाइनिंग एरिया दिखेगा सबसे अलग, इन क्रेटिव आइडियाज

से करें खूबसूरत डेकोरेशन

घर की साज–सजावट का महिलाओं को बहुत ही शोक होता है। ऐसे में वह हर समय इसे डेकोरेट करने के अलग–अलग आइडियाज तराशती हैं। घर के लिविंग रुम से लेकर बेडरुम, डाइनिंग एरिया हर जगह उन्हें सबसे अलग और सुंदर चाहिए होता है। वैसे तो घर में आपने हर जगह डेकोरेशन की होगी लेकिन आज आपको डाइनिंग एरिया को डेकोरेट करने के कुछ यूनिक और अलग आइडियाज बताते हैं। इनसे आपका डाइनिंग एरिया हर

किसी से अलग और खूबसूरत दिखेगा। तो आइए जानते हैं इनके बारे में...

सिंपल चेयर्स और ऊपर ऐसा लैंप लगाकर आप डाइनिंग एरिया सजा सकते हैं।

बीच में एक बड़ा सा प्लांट और आस–पास प्लेट्स और गिलास के साथ डाइनिंग टेबल और भी सुंदर दिखेगा।

व्हाइट चेयर्स और बीच में पीच ट्यूलिप फ्लॉवर डाइनिंग एरिया की सुंदरता बढ़ा देंगे।

आप चाहें तो बीच में ग्रीन प्लांट्स और फ्लावर के साथ इसको और भी खूबसूरती से सजा सकते हैं।

अगर आप कुछ सिंपल तरीके से डेकोरेशन करने की सोच रहे हैं तो इस तरह छोटा सा टेबल डाइनिंग एरिया में लगा सकते हैं।

डाइनिंग एरिया में पड़ी वुडन चेयर्स इसको एक अलग और हटके लुक देंगी।

व्हाइट और लाइट कलर के डेकोर के साथ आप डाइनिंग एरिया को हटके लुक दे सकते हैं।

टेबल के बीच गुल्दस्ता रखकर आप इसको एक अलग तरह का डेकोर लुक दे सकते हैं।

ग्रे कलर भी डाइनिंग रुम को अलग लुक देंगे।

रॉयल लुक के लिए आप डाइनिंग एरिया को इस तरह

अंगूर के हर दाने में छिपा है सेहत का राज, एक नहीं अनेक बीमारियों को करता है दूर

आजकल की भागदौड़ भरी लाइफ ऐसी हो गई है कि हम खाने पीने का अच्छे से ध्यान नहीं रख पाते। ऐसे में आप अपनी डाइट में अंगूर को शामिल कर सकते है जो पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन और मिनरल पाए जाते हैं। इतना ही ही नहीं अंगूर में ग्लूकोज, मैग्नीशियम और साइट्रिक एसिड भी होता है, जो गंभीर बीमारियों से हमारे शरीर की रक्षा करता है। तो चलिए जानते है इसके फायदे।

माइग्रेन

अगर आपको माइग्रेन की समस्या है तो आप सुबह–सुबह बिना पानी मिलाए एक गिलास अंगूर के रस का सेवन करें। इससे आपकी माइग्रेन की परेशानी थेड़ी कम हो जाएगी। वैसे तो कम सोना, मौसम में बदलाव, पाचन समस्या में परेशानी आदि कई माइग्रेन बीमारी का कारण हो सकते हैं, लेकिन एल्कोहल के सेवन को इसकी खास वजह माना जाता है। अंगूर का जूस पीकर इसके खतरे को काफी कम किया जा सकता है।

दिल की बीमारी

अंगूर के सेवन से हार्ट अटैक का खतरा काफी कम हो जाता है। साथ ही इसमें मौजूद एंटी–ऑक्सीडेंट्स एलडीएल कोलेस्ट्रॉल से बचाव करता है। फ्लेवोनॉइड्स की ज्यादा मात्रा भी अच्छे एंटी–ऑक्सीडेंट का काम करती है। इससे ब्रेस्ट कैंसर नहीं फैलता। अंगूर में रेसवेराट्रॉल और क्यूरसेटिन दो प्रकार के तत्व शरीर को रेडिकल्स से बचाकर आर्टरीज को भी सुरक्षित रखने का काम करते हैं। ये ब्लड में प्लेटलेट्स की कमी नहीं होने देते।

अस्थमा

अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए अंगूर बहुत फायदेमंद है। इसमें मौजूद पानी की मात्रा से फेफड़ों में भी पानी की कमी पूरी होती है, जो अस्थमा की संभावना को काफी कम कर देती है।

हड्डियों के लिए

अंगूर कॉपर, आयरन और मैंगनीज का बहुत अच्छा स्रोत होता है, जो हड्डियों के निर्माण और उन्हें मजबूत बनाने में बहुत जरूरी होता है। इसका रोजाना सेवन करने से ऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है। मैंगनीज भी हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी तत्व है जो नर्वस सिस्टम को सही रखता है।

अचार में कभी नहीं लगेगी फंगस, बस रख–रखाव में बरतें ये सावधानियां

गर्मी के मौसम में ज्यादातर लोग खाने के स्वाद को बढ़ाने के लिए अचार डालते है। लेकिन कभी–कभी अचार डालने के कुछ समय बाद इसमें फंगस लग जाती है। जिससे उनकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। अगर आप भी इस समस्या से परेशान है तो चिंता न करें। क्योंकि आज हम आपको कुछ उपायों के बारे में बताएंगे जिन्हें अपनाकर आप अचार को फंगस लगने से बचा सकते हैं। तो चलिए जानते है उनके बारे में।

इन बातों का रखें ध्यान

अगर आप अचार डाल रहे है तो इस बात का ध्यान रखें कि अचार में तेल ज्यादा मात्रा में डालें। क्योंकि अचार में तेल पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण यह जल्दी खराब हो जाता है। इतना ही नहीं अचार बनाते समय इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन अगर साफ न हो तो इसमें फफूंद लगने की संभावना बनी रहती है। अचार में इस्तेमाल होने वाले फलों और सब्जियों के दागदार होने पर भी फंगस लग सकता है।

अचार भरने में बरतें सावधानी

अचार को लंबे समय तक चलाने के लिए इसे चीनी मिट्टी या कांच के बर्तन में डालें। स्टील के बर्तन और प्लास्टिक के डिब्बों में अचार स्टोरेज करने से बचें। वहीं दूसरी ओर प्लास्टिक के जार में अचार रखना सेहत के लिए अच्छा नहीं होता।

नमी से बचाव और सामग्री की मात्रा का रखें ध्यान

अचार में डाले जाने वाले मसालों की मात्रा सही होनी चाहिए। अचार के मसालों में नमी रह जाने से भी अचार जल्दी खराब हो सकता है। इसीलिए अचार बनाने से मसालों को पहले थोड़ा भून लें या धूप में रखकर नमी निकाल दें। इसी तरह मीठे अचार के लिए चाश्नी सही बनानी चाहिए। नमक की मात्रा सही ना होने पर भी अचार जल्दी खराब होने का खतरा रहता है।

ये है अचार रखने का सही तरीका

जब अचार बन जाए तो 3 दिन के लिए उसे एक साफ मलमल के कपड़े से ढककर धूप में रखें। अचार कई तरह के बनते हैं, जैसे तेल वाला अचार, बगैर तेल वाला अचार, मीठा अचार। कुछ एक महीने तो कुछ अचार पूरे साल इस्तेमाल के लिए बनाए जाते हैं। तेल वाले अचार में सही मात्रा में तेल होना जरूरी होता है। इसी तरह मीठे अचार में पानी नहीं रहना चाहिए। रोजाना इस्तेमाल के लिए अचार को बड़े कंटेनर से कांच के किसी छोटे कंटेनर में निकालें।

जंग और टॉयलेट के पुराने दाग से हैं परेशान? आज ही आजमाएं ये आसान ट्रिक

घर की सफाई के लिए लोग अक्सर महंगे केमिकल क्लीनर का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक साधारण और प्राकृतिक चीज भी जिद्दी दाग–धब्बों को आसानी से साफ कर सकती है? साइट्रिक एसिड ऐसा ही एक असरदार घरेलू उपाय है, जो टॉयलेट, बाथरूम, केतली, वॉशिंग मशीन और यहां तक कि जंग लगी धातु की चीजों को भी चमका सकता है। नींबू, संतरा और अन्य खट्टे फलों में पाया जाने वाला साइट्रिक एसिड न सिर्फ सफाई में मदद करता है, बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्प माना जाता है। यही वजह है कि आजकल कई लोग केमिकल क्लीनर की जगह इसका इस्तेमाल करना पसंद कर रहे हैं।

क्यों खास है साइट्रिक एसिड?

साइट्रिक एसिड की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह चूने की परत, जंग, साबुन के दाग और गंदगी को हटाने में मदद कर सकता है। इसके अलावा यह बैक्टीरिया को कम करने और घर में ताजगी बनाए रखने में भी सहायक माना जाता है।

टॉयलेट के जिद्दी दाग ऐसे करें साफः अगर टॉयलेट बाउल में पीले या भूरे रंग के दाग जम गए हैं, तो साइट्रिक एसिड कारगर साबित हो सकता है।

कैसे करें इस्तेमाल?

टॉयलेट बाउल में 2 से 3 चम्मच साइट्रिक एसिड डालें।

इसे कम से कम 1 घंटे के लिए छोड़ दें।

पुराने और जिद्दी दागों के लिए रातभर छोड़ सकते हैं।

इसके बाद ब्रश से रगड़ें और फ्लश कर दें।

इससे टॉयलेट की सफाई आसान हो सकती है और दाग हटाने में मदद मिल सकती है।

केतली में जमी सफेद परत होगी साफ

समय के साथ केतली के अंदर सफेद खनिज परत जम जाती है।

इसे हटाने के लिए केतली में आधा पानी भरें।

1 से 2 चम्मच साइट्रिक एसिड मिलाएं।

पानी को उबाल लें।

15–20 मिनट तक छोड़ दें।

बाद में पानी फेंककर केतली को अच्छी तरह धो लें।

वॉशिंग मशीन और डिशवॉशर की सफाईः खारे पानी और लगातार इस्तेमाल से मशीनों के अंदर परत जम सकती है।

डिटर्जेंट कंपार्टमेंट में 4 से 5 चम्मच साइट्रिक एसिड डालें।

मशीन को खाली हॉट वॉश साइकिल पर चलाएं।

इससे मशीन के अंदर जमा गंदगी और खनिज परत साफ करने में मदद मिल सकती है।

जंग लगी चीजों को भी बना सकता है नया जैसा

अगर लोहे के औजार, सिंक या अन्य धातु की वस्तुओं पर जंग लग गई है, तो साइट्रिक एसिड का इस्तेमाल किया जा सकता है।

कैसे करें इस्तेमाल?

गर्म पानी में 2 से 3 चम्मच साइट्रिक एसिड मिलाएं।

जंग लगी वस्तु को कुछ घंटों तक इसमें भिगो दें।

बाद में ब्रश से साफ करके पानी से धो लें।

नल और शॉवरहेड की चमक लौटाए

नल और शॉवरहेड पर अक्सर मिनरल्स की मोटी परत जम जाती है।

गर्म पानी में साइट्रिक एसिड मिलाएं।

एक कपड़े को इस घोल में भिगोकर नल या शॉवरहेड पर लपेट दें।

लगभग 1 घंटे बाद साफ करें।

इससे उनकी पुरानी चमक वापस लाने में मदद मिल सकती है।

इस्तेमाल से पहले ध्यान रखें इन बातों पर

साइट्रिक एसिड का उपयोग करते समय दस्ताने पहनना बेहतर होता है।

संगमरमर और चुरल चीजों पर इसका इस्तेमाल न करें।

उपयोग के बाद सतह को साफ पानी से जरूर धो लें।

अगर आप बिना महंगे केमिकल क्लीनर के घर की सफाई करना चाहते हैं, तो साइट्रिक एसिड एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। यह टॉयलेट के दाग, जंग, चूने की परत और कई घरेलू गंदगियों को हटाने में मदद करता है, जिससे आपका घर साफ और चमकदार नजर आ सकता है।

क्या वनडे विश्व कप में खेलेंगे रोहित-कोहली?

बीसीसीआई सचिव ने तोड़ी चुप्पी, दिया बड़ा संकेत

मुंबई,एजेंसी। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा है कि 2027 वनडे विश्व कप के लिए भारतीय टीम का रोडमैप तैयार करने की प्रक्रिया लगातार जारी है। हालांकि उन्होंने रोहित शर्मा और विराट कोहली के भविष्य पर कोई स्पष्ट टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। सैकिया ने कहा कि चयन, टीम निर्माण और रणनीति से जुड़े मुद्दों पर नियमित चर्चा होती रहती है, लेकिन यह जानकारी सार्वजनिक करने के लिए नहीं होती। वहीं बांग्लादेश दौरे को लेकर उन्होंने स्पष्ट किया कि बीसीसीआई केंद्र सरकार की नीतियों के अनुसार ही फैसला करेगा। भारत के 2027 वनडे विश्व कप अभियान को लेकर चर्चाएं तेज हैं। खासकर यह सवाल लगातार उठ रहा है कि क्या दिग्गज बल्लेबाज रोहित शर्मा और विराट कोहली उस टूर्नामेंट में भारतीय टीम का हिस्सा होंगे। इन अटकलों के बीच बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने बड़ा बयान दिया है। सैकिया ने कहा कि 2027 विश्व कप के लिए टीम इंडिया की रणनीति और रोडमैप पर लगातार काम चल रहा है, लेकिन इस तरह की चर्चाएं बोर्डरूम तक ही सीमित रहनी चाहिए।

सैकिया ने कहा कि टीम के भविष्य को लेकर सभी संबंधित पक्षों के बीच नियमित बातचीत होती रहती है। उन्होंने कहा, हमारे पास एक मजबूत टीम और कई विशेषज्ञ हैं। सभी हितधारकों को साथ लेकर निर्णय लिए जाते हैं। क्रिकेट समिति, चयनकर्ता, सपोर्ट स्टाफ, मुख्य कोच और संबंधित खिलाड़ियों के साथ लगातार चर्चा होती रहती है। इसके लिए किसी विशेष बैठक की जरूरत नहीं है। यह एक सतत प्रक्रिया है। हालांकि उन्होंने यह बताने से साफ इनकार कर दिया कि रोहित शर्मा और विराट कोहली को लेकर अंदरूनी स्तर पर क्या चर्चा हो रही है।

हाल के महीनों में रोहित और कोहली के 2027 विश्व कप खेलने को लेकर काफी चर्चा हुई है। दोनों खिलाड़ी

इस मेगा इवेंट में खेलने की इच्छा जता चुके हैं, लेकिन चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर और मुख्य कोच गौतम गंभीर भी इस मुद्दे पर स्पष्ट जवाब देने से बचते रहे हैं। सैकिया ने कहा, मैं मीडिया या जनता के सामने ऐसी जानकारी साझा नहीं कर सकता। ये रणनीतिक चर्चाएं हैं और इन्हें बोर्डरूम के भीतर ही रहना चाहिए।

सैकिया ने भारत के संभावित बांग्लादेश दौरे पर भी अपनी बात रखी। पिछले वर्ष बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता के कारण भारत का सीमित ओवरों का दौरा टाल दिया गया था। अब वहां नई निर्वाचित सरकार और नया क्रिकेट प्रशासन मौजूद है। इस पर सैकिया ने कहा, श्बीसीसीआई का राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है। हम भारत सरकार की नीतियों और दिशानिर्देशों का पालन करते हैं। द्विपक्षीय या बहुराष्ट्रीय खेल आयोजनों को लेकर केंद्र सरकार जो नीति तय करती है, हम उसी के अनुसार चलते हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी देश में किस प्रकार की सरकार है, इससे बीसीसीआई का कोई संबंध नहीं है। सैकिया के बयान से इतना साफ है कि 2027 विश्व कप को लेकर बीसीसीआई ने तैयारी शुरू कर दी है, लेकिन रोहित शर्मा और विराट कोहली के भविष्य को लेकर फिलहाल कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है। आने वाले महीनों में टीम चयन, खिलाड़ियों की फॉर्म और फिटनेस के आधार पर कई बड़े निर्णय लिए जा सकते हैं। फिलहाल भारतीय क्रिकेट बोर्ड इस पूरी प्रक्रिया को गोपनीय रखते हुए आगे बढ़ना चाहता है।

संक्षिप्त

27 दिन तिहाड़ में...देशभर में बदनामीय आखिर कैसे संभले एस श्रीसंत? कहा–भुवनेश्वरी ने बचाई मेरी जान

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत को 2007 टी20 विश्व कप और 2011 वनडे विश्व कप जिताने वाली टीम का हिस्सा रहे पूर्व तेज गेंदबाज एस श्रीसंत ने अपने जीवन के सबसे कठिन दौर को लेकर भावुक खुलासा किया है। 2013 के आईपीएल स्पॉट फिक्सिंग मामले में गिरफ्तारी और तिहाड़ जेल में बिताए दिनों को याद करते हुए श्रीसंत ने कहा कि उनकी पत्नी भुवनेश्वरी देवी ने उन्हें मानसिक रूप से टूटने से बचाया। आईपीएल 2013 में स्पॉट फिक्सिंग के आरोपों के बाद श्रीसंत को राजस्थान रॉयल्स के खिलाड़ियों अजीत चांडीला और अंकित चव्हाण के साथ गिरफ्तार किया गया था। उन्हें दिल्ली पुलिस की हिरासत और फिर तिहाड़ जेल में रहना पड़ा। हालांकि 2015 में अदालत ने उन्हें सभी आरोपों से बरी कर दिया, लेकिन उससे पहले उनका जीवन पूरी तरह बदल चुका था। एक इंटरव्यू में श्रीसंत ने अपनी पत्नी भुवनेश्वरी देवी के बारे में बात करते हुए बेहद भावुक बयान दिया। उन्होंने कहा, जब मैं उस दौर से गुजर रहा था, तब मेरे खुद को खत्म न करने की सबसे बड़ी वजह वही थीं। मैंने उनसे 2010 में वादा किया था कि अगर हम 2011 विश्व कप जीतेंगे तो मैं उनसे शादी करूंगा। 2007 में जब वह 10वीं कक्षा में थीं, तभी हमारी मुलाकात हुई थी और 2013 तक हम लगातार संपर्क में रहे। वही सबसे बड़ी वजह थीं कि मुझे जमानत मिली और मैं मजबूत बना रहा। श्रीसंत ने बताया कि उनकी और भुवनेश्वरी की पहली मुलाकात 2007 में एक स्कूल कार्यक्रम के दौरान हुई थी। इसके बाद अलग–अलग मौकों पर मुलाकातें होती रहीं और दोनों के बीच रिश्ता मजबूत होता गया। आखिरकार 2013 में जमानत मिलने के बाद दोनों ने सगाई की और उसी साल शादी भी कर ली। पूर्व भारतीय गेंदबाज ने बताया कि जेल के दिनों ने उन्हें जिंदगी की असली कठिनाइयों का एहसास कराया। उन्होंने कहा, दिल्ली पुलिस की हिरासत में बिताए 12 दिन और तिहाड़ जेल के 27 दिन ने मुझे यह समझाया कि आम जिंदगी में आने वाली परेशानियां कुछ भी नहीं हैं। वहां मैंने देखा कि लोग वर्षों तक मुकदमों का इंतजार करते रहते हैं। उस घटना ने मुझे मानसिक रूप से और मजबूत बनाया। श्रीसंत ने बताया कि उस समय उन्हें अपने माता–पिता और परिवार की सबसे ज्यादा चिंता थी। मीडिया में लगातार नाम आने से परिवार पर भी भारी दबाव था। उन्होंने कहा, उस समय मैं अपनी मां, पिता, भतीजे और भतीजी के बारे में सोचता रहता था। मैंने उन्हें स्कूल तक नहीं जाने दिया था। लगभग एक महीने तक पूरे देश का ध्यान सिर्फ मुझ पर था। श्रीसंत के मुताबिक, उस दौर में उन्हें देशभर में खलनायक की तरह पेश किया जा रहा था। लेकिन उनकी पत्नी और ससुराल वालों ने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा। यही समर्थन उन्हें मुश्किल हालात से बाहर निकालने में सबसे बड़ी ताकत बना। विश्व कप विजेता खिलाड़ी की यह कहानी बताती है कि मैदान पर सफलता हासिल करने वाले खिलाड़ी भी निजी जिंदगी में कितने बड़े संघर्षों से गुजरते हैं और कई बार परिवार का साथ ही उन्हें टूटने से बचाता है।

जंग खत्म होने के बीच कीमती धातुएं हुई सस्ती, सोना–चांदी के भाव में तीन फीसदी की गिरावट

मुंबई,एजेंसी। भू–राजनीतिक तनाव में कमी आने से सुरक्षित निवेश (सेफ हेवन) की मांग कमजोर होने से हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को लगातार तीसरे सत्र में सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना अपने पिछले बंद 1,49,309 रुपए से 2.3 प्रतिशत गिरकर 1,45,800 रुपए के दिन के निम्नतम स्तर पहुंच गया। यह सोना आज 1,47,175 रुपए प्रति 10 ग्राम पर खुला। हालांकि शुरुआती कारोबार में खबर लिखे जाने तक (सुबह 10.29 बजे के करीब) पीली धातु 3,507 रुपए या 2.35 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,45,802 रुपए प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही थी।वहीं, जुलाई डिलीवरी वाली चांदी 8,515 रुपए यानी 3.58 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2,29,057 रुपए प्रति किलोग्राम पर ट्रेड करती नजर आई। सफेद धातु ने शुरुआती कारोबार में अपने पिछले बंद 2,37,572 रुपए से 5,201 रुपए या 2.1 प्रतिशत गिरकर 2,32,371 रुपए पर खुला और 3.6 प्रतिशत गिरकर 2,28,800 रुपए के दिन के निचले स्तर तक पहुंच गया। इस बीच, कॉमेक्स गोल्ड 2.4 प्रतिशत की गिरावट के साथ 4,141 डॉलर के लेवल पर ट्रेड करता नजर आया, जबकि कॉमेक्स सिल्वर 4.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 63.45 के लेवल पर कमजोर रुख के साथ ट्रेड करता नजर आया। एक मार्केट एक्सपर्ट के अनुसार, जनवरी में सोने की कीमत 5,595 डॉलर के सबसे ऊंचे स्तर पर थी। तब से इसमें लगभग 24 प्रतिशत की गिरावट आई है। वहीं, शुक्रवार को अमेरिकी फेड की वजह से हुई बिकवाली ने इस गिरावट को और बढ़ा दिया है। इसके कारणों में तेल की कीमतों में उछाल से महंगाई का डर, ब्याज दरों में बढ़ोतरी का माहौल, डॉलर का मजबूत होना और लीवरेज्ड पोजीशन (उधार लेकर लगाई गई रकम) का खत्म होना शामिल है। ये उतार–चढ़ाव समय–समय पर होने वाले बदलाव हैं, न कि कोई बुनियादी खराबी। एक्सपर्ट ने आगे कहा कि इसके बावजूद, जो कोई भी पूरे भरोसे के साथ यह कह रहा है कि कीमत अब सबसे निचले स्तर पर है। वह सिर्फ अंदाजा लगा रहा है।

नाइटक्लब विवाद के बाद फिर इंग्लैंड टीम में लौटेंगे बेन स्टोक्स? तीसरे टेस्ट मैच में वापसी के संकेत

लंदन,एजेंसी। इंग्लैंड के नियमित कप्तान बेन स्टोक्स न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले तीसरे और अंतिम टेस्ट मैच के लिए राष्ट्रीय टीम में वापसी कर सकते हैं। ब्रिटिश मीडिया की रिपोर्ट्स के मुताबिक, इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड और चयनकर्ता इस स्टार ऑलराउंडर को दोबारा टीम में शामिल करने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। लॉर्ड्स में खेले गए सीरीज के पहले मैच में मेजबान इंग्लैंड की जीत हुई थी। इस जीत के बाद बेन स्टोक्स और तेज गेंदबाज गस एटकिंसन को मिडनाइट कर्फ्यू (आधी रात की समय सीमा) का उल्लंघन करने का दोषी पाया गया था। अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए दोनों खिलाड़ियों को द ओवल में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट मैच की टीम से बाहर कर दिया गया था। इस विवाद के बाद ऐसी अटकलें भी लगाई जाने लगी थीं कि स्टोक्स से टेस्ट कप्तानी छीनी जा सकती है और वह इस पूरे घटनाक्रम से आहत होकर संन्यास का ऐलान भी कर सकते हैं। बीसीसीआई और अन्य मीडिया घरानों की रिपोर्ट के अनुसार, ईसीबी और स्वतंत्र क्रिकेट रेगुलेटर द्वारा की जा रही जांच अब अपने अंतिम चरण में है। इसी वजह से स्टोक्स के नॉटिंघम के ट्रेंट ब्रिज में होने वाले अगले मुकाबले के लिए टीम से जुड़ने की पूरी संभावना है। गौरतलब है कि स्टोक्स पिछले चार वर्षों से इंग्लैंड की टेस्ट टीम की कप्तानी संभाल रहे हैं और बतौर कप्तान उनका रिकॉर्ड शानदार रहा है। उनकी अनुपस्थिति में मौजूदा टेस्ट मैच के लिए जो रूट को टीम की कमान सौंपी गई है, क्योंकि चयनकर्ताओं ने उप–कप्तान हैरी ब्रुक को नजरअंदाज करने का फैसला किया था।

बेन स्टोक्स शुक्रवार को मैदान पर एक्शन में दिखाई देंगे। उन्हें चेस्टर–ले–स्ट्रीट में नॉर्थम्पटनशायर के खिलाफ डरहम के लिए सेकेंड डिवीजन काउंटी चौंपियनशिप मैच खेलने की अनुमति मिल गई है। इससे पहले स्टोक्स ने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के लिए इंग्लैंड की टीम और डेब्यू करने वाले तीन खिलाड़ियों को अपनी शुभकामनाएं भी भेजी थीं। हालांकि, ईसीबी की इस कार्रवाई के बाद इंग्लैंड के मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम, स्टोक्स को लेकर काफी चिंतित और परेशान नजर आ रहे हैं। इस बीच डरहम के कोच रयान कैंपबेल ने स्टोक्स का बचाव करते हुए कहा कि बेन जानते हैं कि उन्होंने गलती की है और कर्फ्यू तोड़ा है, लेकिन इस मामले पर आई कुछ प्रतिक्रियाएं जरूरत से ज्यादा बढ़ा–चढ़ाकर दी गई हैं। मैंने उन्हें जितना देखा है, वह अच्छे मूड में हैं, ट्रेनिंग पर लौट आए हैं और कड़ी मेहनत कर रहे हैं। बाकी चीजें खुद–ब–खुद ठीक हो जाएंगी। बेन एक सच्चे प्रतिस्पर्धी हैं, उन्हें खेलना पसंद है और वह मैदान पर उतरना चाहते हैं। इंग्लैंड के महान ऑलराउंडर इयान बॉथम ने इस पूरे विवाद पर चिंता जताते हुए कहा था कि अगर स्टोक्स को टेस्ट कप्तानी से हटाया गया तो वह क्रिकेट को हमेशा के लिए अलविदा कह सकते हैं।

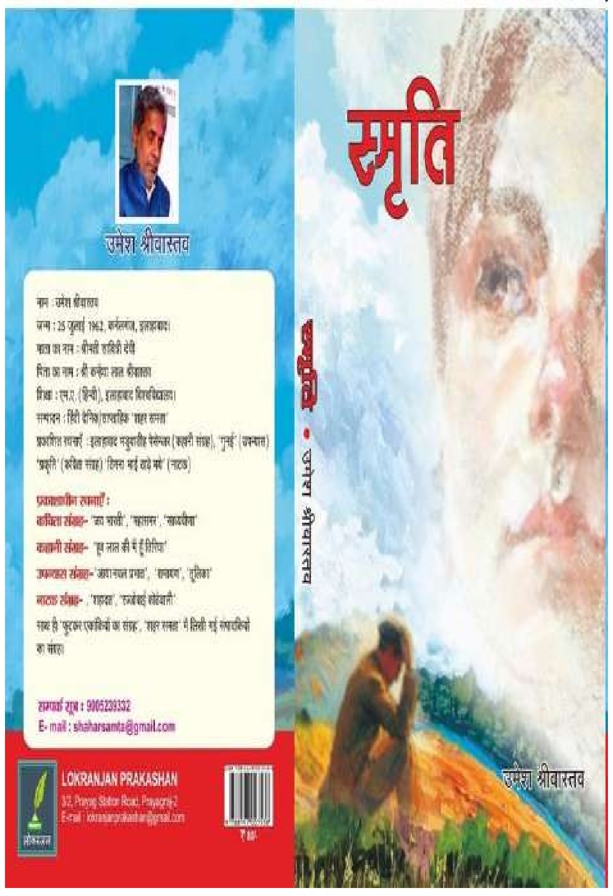

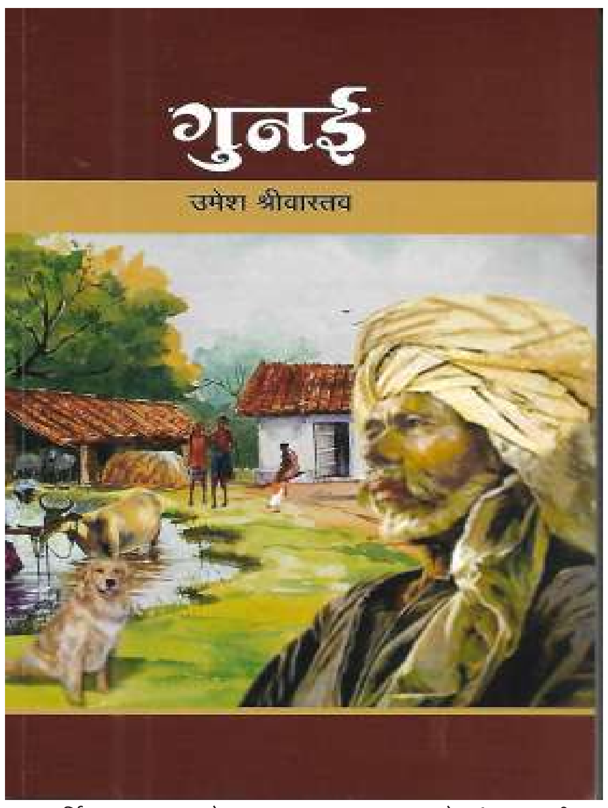

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

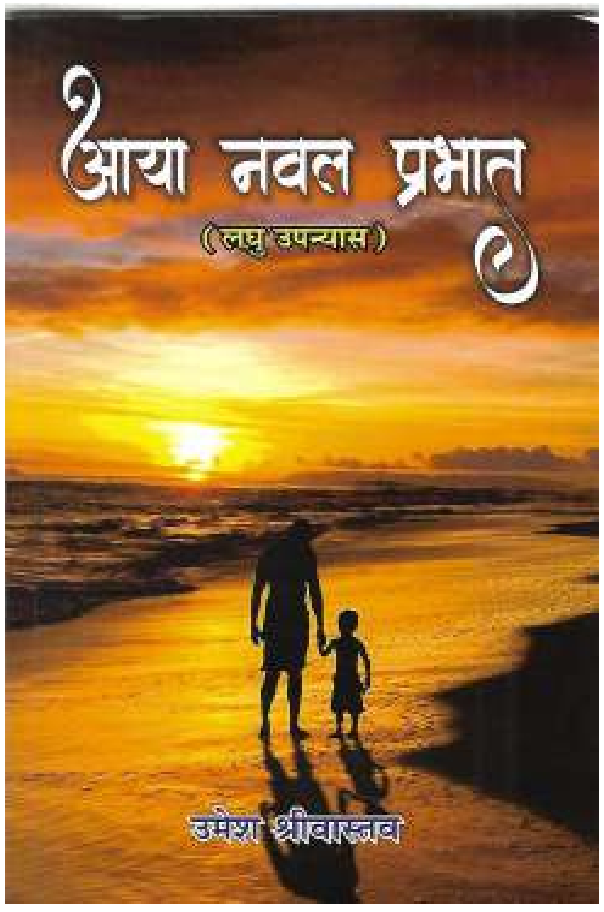

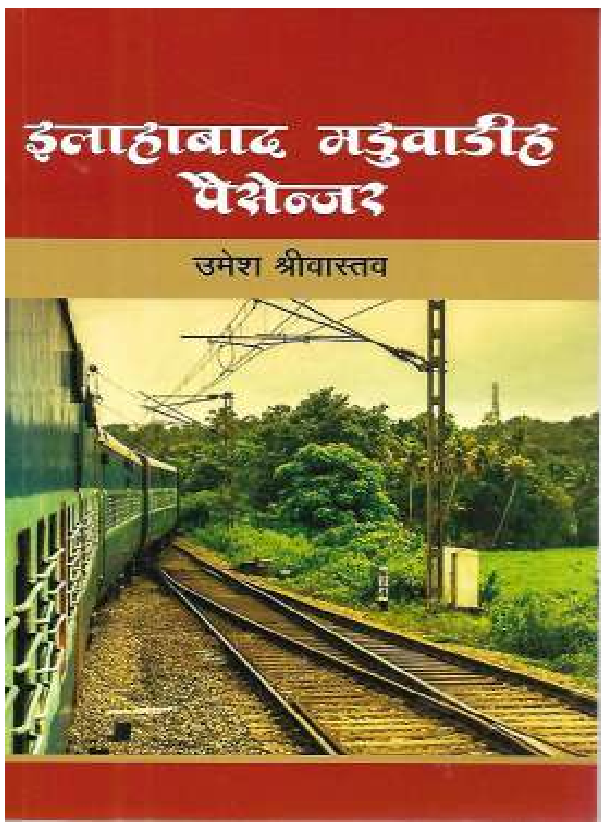

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

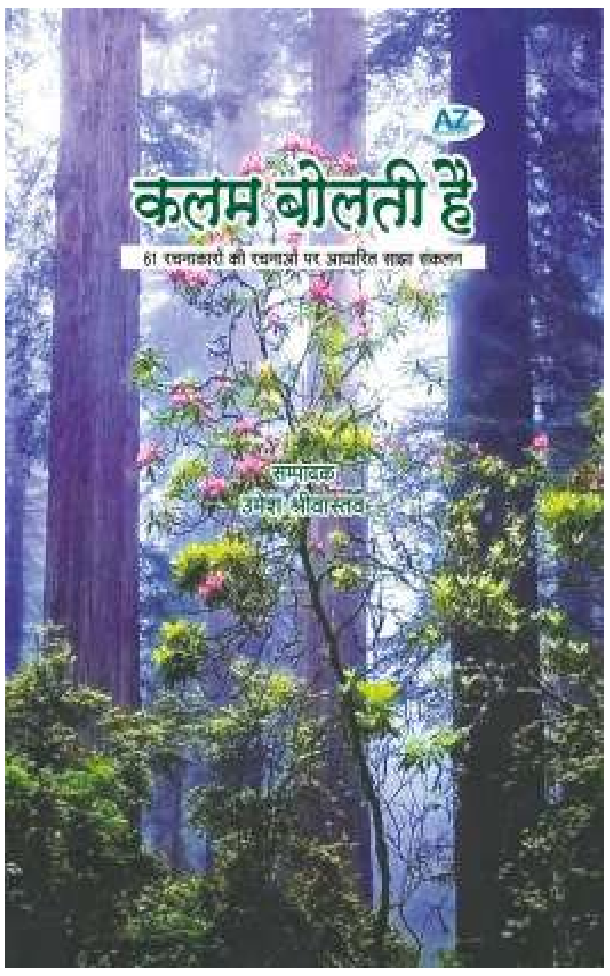

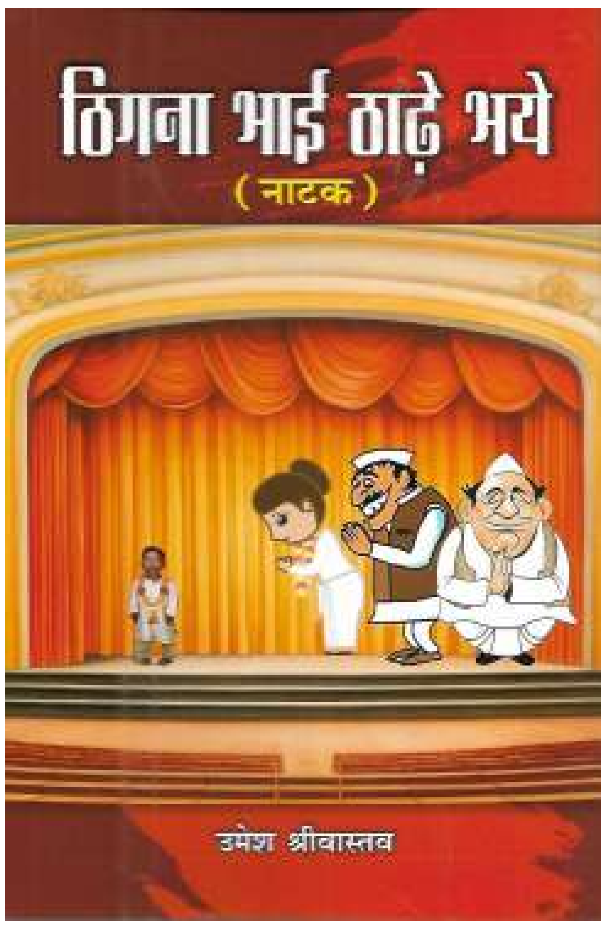

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

शिनबाम बोलीं- ट्रंप के दावे गलत, फ्रांस में बोले थे US के राष्ट्रपति- मेक्सिको पर ड्रग कार्टेल का राज

मेक्सिको, एजेंसी। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हालिया दावे को खारिज कर दिया है। जिसमें उन्होंने कहा था कि मेक्सिको को पूरी तरह से ड्रग कार्टेल (नशीली दवाओं के गिरोह) चला रहे हैं।

ट्रंप ने जी–7 शिखर सम्मेलन के दौरान शिनबाम को एक बहुत डरी हुई महिला भी कहा था। क्या बोलीं राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम? मेक्सिको सिटी के नेशनल पैलेस में अपनी रोजाना की मीडिया वार्ता में शिनबाम ने ट्रंप की टिप्पणियों पर किसी भी विवाद से बचने की कोशिश की। फ्रांस के इवियन–लेस–बैंस में हुई इस बैठक में ट्रंप ने मेक्सिको की स्थिति पर सवाल उठाए थे। शिनबाम ने इन बातों को खारिज करते हुए कहा कि यह कुछ भी नया नहीं है। उन्होंने कहा कि ट्रंप पहले भी ऐसी बातें कह चुके हैं। उनके अनुसार, ट्रंप के संवाद करने का अपना एक अलग तरीका है और हमें उनके हर बयान को पकड़कर नहीं बैठना चाहिए। शिनबाम ने जोर देकर कहा कि ट्रंप के पास सही और पूरी जानकारी नहीं है। उन्होंने अपनी सरकार की अपराध विरोधी रणनीति और अपनी सुरक्षा टीम की मेहनत का बचाव किया। राष्ट्रपति ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि देश में जानबूझकर की जाने वाली हत्याओं और हिंसा के अन्य मामलों में कमी आई है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वे ऐसा कोई भी फैसला नहीं लेंगी जिससे मेक्सिको की आजादी और संप्रभुता को नुकसान पहुंचे।

ट्रंप ने क्या कहा था? इससे पहले ट्रंप ने अपने भाषण में दावा किया था कि पानी के रास्ते होने वाली नशीली दवाओं की तस्करी में 90 प्रतिशत से ज्यादा की कमी आई है। अब उनका पूरा ध्यान जमीन के रास्ते अमेरिका में घुसने वाली दवाओं पर है। ट्रंप ने कहा था कि ये दवाएं मेक्सिको के रास्ते आती हैं और मेक्सिको ने अपने देश पर से नियंत्रण खो दिया है। उन्होंने कहा कि यह दुखद है कि वहां के गिरोह पूरे देश को चला रहे हैं। ट्रंप ने शिनबाम को एक अच्छी महिला तो बताया, लेकिन साथ ही उन्हें डरा हुआ भी करार दिया। यह बयान ऐसे समय में आया है जब दोनों देशों के बीच तनाव काफी बढ़ गया है। शिनबाम अपने देश के उन बड़े राजनेताओं को बचाने की कोशिश कर रही हैं, जिन पर अमेरिका में आरोप लगे हैं या ड्रग गिरोहों से संबंधों के लिए जांच चल रही है।

विशेष चुनाव में जीते लेबर पार्टी नेता बर्नहैम, पीएम स्टार्मर के सामने पद बरकरार रखना चुनौती

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन में एंडी बर्नहैम ने विशेष चुनाव में जीत हासिल की है। इस जीत के बाद वे प्रधानमंत्री स्टार्मर को चुनौती दे सकते हैं। शुक्रवार को घोषित नतीजों के बाद बर्नहैम लेबर पार्टी के नेता के अलावा देश में प्रधानमंत्री पद के प्रमुख दावेदार बनकर उभरे हैं। बर्नहैम ने उत्तर–पश्चिमी इंग्लैंड के मेकरफील्ड सीट पर रिफॉर्म यूके के रॉब केन्यॉन को हराया।

उन्होंने वादा किया है कि यदि लोग उन पर भरोसा करते हैं, तो वह राजनीति बदल देंगे। ब्रिटेन की संसद– हाउस ऑफ कॉमन्स के 650 सांसदों में से एक राजनेता– बर्नहैम के इस दावे को बड़ा माना जा रहा है। लेबर पार्टी के सांसदों ने मांगा स्टार्मर के इस्तीफे की मांग की बर्नहैम ने चुनाव नतीजों की घोषणा के बाद कहा कि वह बदलाव की लड़ाई को जितना ऊंचा ले जा सकते हैं, ले जाएंगे। जुलाई 2024 में शानदार चुनावी जीत के बाद से स्टार्मर की लोकप्रियता में भारी गिरावट आई है। वह आर्थिक वृद्धि, सार्वजनिक सेवाओं की मरम्मत और जीवन–यापन की लागत को कम करने में संघर्ष कर रहे हैं। वह बार–बार की गई गलतियों से भी जूझ रहे हैं। इनमें पीटर मैंडेलसन को अमेरिका में राजदूत नियुक्त करने का उनका निर्णय शामिल है। मैंडेलसन जेफरी एपस्टीन के एक विवादित मित्र हैं। मई के स्थानीय चुनावों में खराब प्रदर्शन के बाद कई लेबर पार्टी के सांसदों ने स्टार्मर के इस्तीफे की मांग की। क्या स्टार्मर पर बढ़ रहा पद छोड़ने का दबाव? स्टार्मर ने पद छोड़ने से इनकार कर दिया है, लेकिन उनके वरिष्ठ सहयोगी बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं। मई में वेस स्ट्रीटिंग ने स्वास्थ्य सचिव पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने कहा था कि जहां हमें दूरदर्शिता की आवश्यकता है, वहां एक शून्य है। मेकरफील्ड के लेबर सांसद जोश साइमन ने बर्नहैम को संसद में लौटने का अवसर देने के लिए इस्तीफा दिया। ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली गवर्निंग पार्टियों को मध्यावधि में नेता बदलने की अनुमति देती है। इस प्रक्रिया में विजेता को राष्ट्रीय चुनाव की आवश्यकता के बिना प्रधानमंत्री बना दिया जाता है। लेबर नियमों के तहत, एक सांसद पार्टी के हाउस ऑफ कॉमन्स के एक–पांचवें यानी 81 सांसदों के समर्थन से नेता को चुनौती दे सकता है। देश में नेतृत्व की दौड़ में कौन, बर्नहैम की दावेदारी कितनी मजबूत? स्ट्रीटइंग ने मंगलवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि स्टार्मर पद छोड़ने के लिए सहमत होंगे। यदि ऐसा नहीं होता है, तो एक प्रतियोगिता की आवश्यकता होगी और वह इसके लिए तैयार होंगे।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाइल नम्बर 9190052 39332
919450482227

कांगो में इबोला से अब तक 232 मौतें, सक्रमितों की संख्या 896 पहुंचीय युगांडा को UN से मिली +40 लाख की मदद

किंशासा, एजेंसी। डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (क्त) में इबोला वायरस का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों ने जानकारी दी है कि देश में इबोला के पुष्ट मामलों की संख्या अब 896 हो गई है। इस खतरनाक बीमारी ने अब तक 232 लोगों की जान ले ली है। स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को इटुरी और नॉर्थ किवू प्रांतों में इबोला के 21 नए मामले सामने आए, जिनमें छह लोगों की मौत हो गई। लगातार बढ़ रहे मरीजों की संख्या यह प्रकोप अब पूर्वी कांगो के तीन प्रांतों– इटुरी, नॉर्थ किवू और साउथ किवू के 33 स्वास्थ्य क्षेत्रों तक फैल चुका है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि वर्तमान में 383 मरीज अस्पतालों में भर्ती हैं या उन्हें अलग (आइसोलेशन) रखा गया है। राहत की बात यह है कि

78 मरीज इस बीमारी से पूरी तरह ठीक हो चुके हैं। वहीं 11 ऐसे मरीज भी शामिल हैं जिनकी जांच रिपोर्ट हाल ही में नकारात्मक आई है। 6,367 लोगों की हो रही निगरानी प्रशासन के लिए चिंता की बात यह है कि बुधवार को ही 151 संदिग्ध मामले भी दर्ज किए गए, जिनमें 35 मौतें शामिल हैं। अधिकारी अब उन 6,367 लोगों की कड़ी निगरानी कर रहे हैं जो मरीजों के संपर्क में आए थे। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि पुष्ट मामलों की संख्या हर हफ्ते बढ़ रही है। इसका मतलब है कि समुदाय के स्तर पर संक्रमण अभी भी फैल रहा है। अगर स्वास्थ्य संबंधी उपायों को तुरंत और मजबूती से लागू नहीं किया गया, तो यह बीमारी बहुत जल्द नए इलाकों में भी पहुंच सकती है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार, डीआरसी में यह मौजूदा प्रकोप इबोला का 17वां प्रकोप है, जिसे आधिकारिक रूप से 15 मई को घोषित किया गया था। इबोला का इतिहास काफी पुराना है। यह बीमारी पहली बार 1976 में सूडान और कांगो में एक साथ सामने आई थी। कांगो में यह इबोला नदी के पास स्थित एक गांव में फैली थी, जिसके कारण इसका नाम श्इबोलाश पड़ा। इस बीमारी के लक्षण अचानक दिखाई देते हैं, जिनमें तेज बुखार, थकान, मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द और गले में खराश शामिल हैं। हालत बिगड़ने पर मरीज को उल्टी, दस्त, पेट दर्द और त्वचा पर चकत्ते हो सकते हैं। यह वायरस गुर्दे और लीवर को भी नुकसान पहुंचाता है। संयुक्त राष्ट्र ने बढ़ाया मदद का हाथ इस संकट के बीच संयुक्त राष्ट्र ने मदद का हाथ बढ़ाया है। संयुक्त राष्ट्र के आपातकालीन राहत समन्वयक टॉम फ्लेचर ने युगांडा में इबोला से निपटने के लिए 40 लाख अमेरिकी डॉलर की राशि मंजूर की है। यह पैसा संयुक्त राष्ट्र के केंद्रीय आपातकालीन प्रतिक्रिया कोष (CERF) से दिया गया है। अलग–अलग अंतरराष्ट्रीय संगठन जैसे यूनिसेफ और विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) इस काम में सहयोग कर रहे हैं। विश्व खाद्य कार्यक्रम ने मरीजों और स्वास्थ्यकर्मियों के लिए 6,000 से अधिक भोजन के पैकेट उपलब्ध कराए हैं। कांगो में भी संयुक्त राष्ट्र और उसके सहयोगी संगठनों ने इस सप्ताह 16 मीट्रिक टन से अधिक चिकित्सा सामग्री पहुंचाई है। किंशासा के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर नई स्वास्थ्य जांच सुविधाएं भी बनाई गई हैं ताकि संक्रमण की निगरानी बेहतर हो सके। संयुक्त राष्ट्र ने जूलियन हार्नेस को वरिष्ठ इबोला समन्वयक नियुक्त किया है। वे राहत कार्यों के बीच तालमेल बिठाने और सहायता को तेजी से जरूरतमंदों तक पहुंचाने का काम करेंगे। बता दें कि इबोला एक बहुत ही घातक वायरस है, जिसमें मृत्यु दर लगभग 50 प्रतिशत तक होती है। यह संक्रमित जानवरों या इंसानों के शरीर से निकलने वाले तरल पदार्थों के सीधे संपर्क में आने से फैलता है।

'ट्रंप इस्राइल के एकमात्र समर्थक': ईरान-US समझौते की आलोचना पर वेंस की दो-टूक, नेतन्याहू डील से खफा क्यों हैं?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते की आलोचना करने पर इस्राइल को कड़ी चेतावनी दी है। हफ्तों के तनाव के बाद हुए इस समझौते का बचाव करते हुए वेंस ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप इस्राइल के इकलौते सहयोगी हैं। उनकी यह टिप्पणी उन खबरों के बीच आई है जिनमें कहा गया था कि प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और उनके साथी इस समझौते से निजी तौर पर नाखुश हैं। यह समझौता ईरान के साथ संघर्ष को खत्म करने के लिए किया गया है। वेंस ने जोर देकर कहा कि वॉशिंगटन अब भी इस्राइल का सबसे मजबूत और महत्वपूर्ण दोस्त बना हुआ है। व्हाइट हाउस में एक ब्रीफिंग के दौरान उन्होंने उन आलोचकों को जवाब दिया जो कह रहे हैं कि यह समझौता ईरान के परमाणु और मिसाइल कार्यक्रमों को रोकने में नाकाम रहा है। आलोचकों का यह भी मानना है कि इससे लेबनान में हिजबुल्लाह के खिलाफ इस्राइल की सैन्य कार्रवाई पर रोक लग

सकती है।

नेतन्याहू की नाराजगी की खबरों पर वेंस ने कहा कि उन्होंने सीधे प्रधानमंत्री से ऐसी कोई बात नहीं सुनी है। हालांकि, उन्होंने इस्राइली कैबिनेट के सदस्यों की जमकर आलोचना की। वेंस ने कहा कि उनका संदेश साफ है। पहली बात यह कि पूरी दुनिया में इस समय डोनाल्ड ट्रंप ही एकमात्र ऐसे राष्ट्राध्यक्ष हैं जो इस्राइल के प्रति सहानुभूति रखते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अगर वे इस्राइली सरकार की कैबिनेट में होते, तो वे दुनिया के अपने इकलौते ताकतवर सहयोगी पर हमला नहीं करते। उपराष्ट्रपति ने इस्राइल को मिलने वाली अमेरिकी सैन्य मदद का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि इस्राइल की रक्षा करने वाले दो–तिहाई हथियार अमेरिका ने बनाए हैं और इनके लिए अमेरिकी टैक्स के पैसों से भुगतान किया गया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका वर्तमान में इस्राइल को हर साल लगभग चार अरब डॉलर की सैन्य सहायता देता है। हालांकि, नेतन्याहू के कार्यालय या इस्राइली विदेश मंत्रालय ने अभी तक इन टिप्पणियों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। वेंस ने कहा कि इस्राइल के लिए समस्या डोनाल्ड ट्रंप नहीं हैं। जो लोग ऐसा सोचते हैं, उन्हें जागने और हकीकत समझने की जरूरत है। दूसरी तरफ, इस्राइली अधिकारियों ने नाम न छापने की शर्त पर रॉयटर्स से कहा कि यह समझौता ईरान के परमाणु और मिसाइल खतरों को दूर नहीं करता है। नेतन्याहू ने बाद में कहा कि इस्राइल अमेरिका के साथ अपने रिश्तों की कद्र करता है, लेकिन वह दक्षिणी लेबनान में अपनी सुरक्षा के लिए मौजूदगी बनाए रखेगा। विवाद तब और बढ़ गया जब वेंस ने द न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में इस्राइली मंत्रियों इतामार बेन–ग्वीर और बेजेलेल स्मोट्रिच की आलोचना की। उन्होंने पूछा कि आपका सटीक प्रस्ताव क्या है? आप 90 लाख लोगों का देश हैं और आप हर राष्ट्रीय सुरक्षा समस्या का समाधान सिर्फ हिंसा के जरिए नहीं कर सकते। उन्होंने समझौते को लेकर इस्राइल में मची घबराहट को अजीब बताया। इस बीच, व्हाइट हाउस ने जानकारी दी कि वेंस ईरान के साथ तकनीकी बातचीत के लिए स्विट्जरलैंड नहीं जाएंगे। अधिकारियों ने बताया कि समझौते को लागू करने के तरीकों पर बातचीत जारी है। जबकि पाबंदियों में ढील और अस्थायी युद्धविराम के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल की सप्लाई फिर से शुरू हो गई है।

समझौते पर खामेनेई का पहला बयान, कहा- ट्रंप को मजबूरी में करना पड़ा MoU; यूएस झुका या ईरान जीता?

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई ने अमेरिका के साथ एक समझौता ज्ञापन (डव) पर हस्ताक्षर की पुष्टि करते हुए एक खास पोस्ट में कहा कि यह समझौता ईरान की उत्सुकता से नहीं, बल्कि अमेरिका की मजबूरी की वजह से हुआ है। खामेनेई ने अपने पोस्ट में लिखा, श्जैसा कि आपको बताया गया है, ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के

राष्ट्रपतियों के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।श ईरानी अधिकारियों ने इस मुकाम तक पहुंचने के लिए ईमानदारी से काम किया था, लेकिन अमेरिकी पक्ष ने ही सबसे अधिक जोर दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने ही मजबूरी में आकर इसे अंजाम देने के लिए हर तरह के दबाव और तरीकों का इस्तेमाल किया। समझौते पर थी आपत्ति, फिर भी क्यों दी मंजूरी?

खामेनेई ने माना कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से इस समझौते को लेकर कुछ आपत्तियां थीं। उन्होंने कहा, श्सिद्धांत के तौर पर मेरी राय अलग थी,श लेकिन साथ ही यह भी कहा कि उन्होंने ईरानी राष्ट्र और श्रेसिस्टेंस फ्रंटश (प्रतिरोध मोर्चा) के अधिकारों की रक्षा करने के ईरानी राष्ट्रपति के वादे के आधार पर अपनी मंजूरी दे दी। अमेरिका ने सीमा लांघी तो नहीं झुकेगा ईरान हालांकि खामेनेई ने इस पोस्ट में यह भी कहा कि अगर अमेरिका तय की गई बातों से आगे बढ़ने की कोशिश करेगा तो ईरान झुकेगा नहीं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अगर अमेरिकी पक्ष हद से ज्यादा मांगें रखने की कोशिश करेगा, तो वे उन्हें नहीं मानेंगे। उन्होंने खुद को श्विनम्र सेवकश बताते हुए सीधे अपने देश को संबोधित किया और ईरानियों से तय शर्तों के पूरा होने का इंतजार करने को कहा। वर्साय के महल में हुई ऐतिहासिक घोषणा

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर ळ7 शिखर सम्मेलन के समापन के बाद फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों द्वारा वर्साय के महल में आयोजित रात्रिभोज के दौरान किए गए। मैक्रों ने एक्स पर इस घटनाक्रम की घोषणा करते हुए समझौते को ऐसा बताया जो श्स्थायी शांति का रास्ता बनाता है और होर्मुज को फिर से खोलने की अनुमति देता है।श जिनेवा वार्ता पर भी बनी सहमति

औपचारिक हस्ताक्षर मूल रूप से शुक्रवार को स्विट्जरलैंड में होने वाले थे। तेहरान ने पुष्टि की कि जिनेवा में होने वाली नियोजित बैठक तय कार्यक्रम के अनुसार होगी। इस्लामाबाद डवन्स में क्या–क्या है खास? इस दस्तावेज का औपचारिक शीर्षक श्संयुक्त राज्य अमेरिका और इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के बीच इस्लामाबाद समझौता ज्ञापनश है। इसमें लेबनान सहित सभी मोर्चों पर सैन्य अभियानों को तुरंत और स्थायी रूप से समाप्त करने की मांग की गई है। नाकेबंदी हटेगी, सेना लौटेगी इस शर्तों के तहत अमेरिका ने 30 दिनों के भीतर ईरान की नौसैनिक नाकेबंदी हटाने का वादा किया है। इस दौरान जहाजों की आवाजाही के युद्ध–पूर्व स्तर पर लौटने की उम्मीद है। अमेरिका अंतिम समझौता होने के 30 दिनों के भीतर ईरान के आसपास से अपनी सेना हटाने पर भी सहमत हो गया है। अपनी ओर से ईरान 60 दिनों तक बिना किसी शुल्क के वाणिज्यिक जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करने पर सहमत हुआ है।

Japan: टोक्यो में स्कूल के म्यूजिक रूम में लगी आग, मची अफरा-तफरी, छात्रों समेत 300 लोगों को किया गया रेस्क्यू

टोक्या, एजेंसी। जापान में उत्तरी टोक्यो के एक प्राथमिक स्कूल में शुक्रवार को आग लग गई। यह घटना ताकिनोगावा दाइसान एलीमेंट्री स्कूल की है। आग स्कूल की चौथी मंजिल पर बने म्यूजिक रूम (संगीत कक्ष) में लगी थी। आग लगने के तुरंत बाद सावधानी बरतते हुए पूरे स्कूल को खाली करा लिया गया। NHK की रिपोर्ट के मुताबिक, आग से निकले धुएं के कारण दम घुटने से कई छात्र घायल हो गए हैं। इन छात्रों को सांस के साथ धुआं अंदर जाने की वजह से तकलीफ हुई है। जिस समय यह हादसा हुआ, उस समय स्कूल में लगभग 300 छात्र और कर्मचारी मौजूद थे।

यूएन से आई चौंकाने वाली रिपोर्ट: युद्धों में बच्चों पर टूटा कहर, पहली बार सरकारी सेनाएं बनीं सबसे बड़ी दोषी

न्यूयार्क, एजेंसी। संघर्ष और युद्ध क्षेत्रों में बच्चों की स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र (न्छ) की नई रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल दुनिया भर में करीब 25,000 बच्चे हत्या, यौन हिंसा, अपहरण और जबरन लड़ाई में भर्ती किए जाने जैसे गंभीर अपराधों का शिकार हुए। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि 30 वर्षों में पहली बार सरकारी सेनाएं बच्चों के खिलाफ सबसे ज्यादा गंभीर उल्लंघनों के लिए जिम्मेदार पाई गई हैं। लगातार चौथे साल बढ़े बच्चों के खिलाफ अपराध UN की रिपोर्ट के अनुसार, बच्चों के खिलाफ दर्ज गंभीर उल्लंघनों की संख्या लगातार चौथे वर्ष बढ़ी है। वर्ष 2025 में ऐसे 38,558 मामले

सत्यापित किए गए, जिनमें बच्चों की हत्या, अपहरण, स्कूलों और अस्पतालों पर हमले तथा मानवीय सहायता रोकने जैसी घटनाएं शामिल हैं। 24 हजार से ज्यादा बच्चे हुए प्रभावित रिपोर्ट में बताया गया है कि कुल 24,174 बच्चे इन घटनाओं से प्रभावित हुए। इनमें लगभग एक–तिहाई लड़कियां थीं। कई बच्चों को एक साथ कई तरह की हिंसा और अत्याचारों का सामना करना पड़ा। 30 साल में पहली बार बदली तस्वीर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक, बच्चों पर होने वाले अत्याचारों की निगरानी शुरू होने के तीन दशक बाद पहली बार सरकारी बल अधिकांश गंभीर उल्लंघनों के लिए जिम्मेदार पाए गए हैं। पहले आमतौर पर सशस्त्र विद्रोही और आतंकी समूह ऐसे मामलों में प्रमुख दोषी माने जाते थे। इस्राइली सेना सबसे ऊपर, कांगो दूसरे नंबर पर रिपोर्ट में कहा गया है कि 2025 के दौरान सबसे ज्यादा 12,445 उल्लंघन इस्राइली सेना और उससे जुड़ी सुरक्षा एजेंसियों के खाते में दर्ज किए गए। इसके बाद डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो में 4,114 मामले सामने आए। म्यांमार, सोमालिया और नाइजीरिया के विभिन्न सशस्त्र समूहों द्वारा भी 2,000 से अधिक गंभीर उल्लंघन किए गए। सूची में सूडान, दक्षिण सूडान, सीरिया और यूक्रेन में रूसी सैन्य बलों का भी उल्लेख है। बच्चों की मौत और चोट के मामलों में भी सरकारी बल आगे

रिपोर्ट के अनुसार, सरकारी सेनाएं 6,266 बच्चों की मौत के लिए जिम्मेदार पाई गईं। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की तुलना में 34 प्रतिशत अधिक है। वहीं 7,958 बच्चों के घायल होने की भी पुष्टि हुई है। गाजा में हजारों बच्चों की मौत संयुक्त राष्ट्र ने पुष्टि की है कि गाजा में इस्राइल सैन्य कार्रवाई के दौरान 2,668 फिलिस्तीनी बच्चों की मौत हुई। इसके अलावा पश्चिमी तट और पूर्वी यरुशलम में 55 बच्चों के मारे जाने की पुष्टि हुई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि गाजा में 4,588 अतिरिक्त बच्चों की मौत और 346 इस्राइल बच्चों के घायल होने की खबरों की जांच अभी जारी है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।